بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 10

राह-ए-ईमान

अक्टूबर
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुमअः (दिनांक 26.07.2024) 8
7. क़यामत की निशानी 12
8. अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों पर ऐतराज़ का जवाब 23
9. प्रेम सब से, घृणा किसी से नहीं 28

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

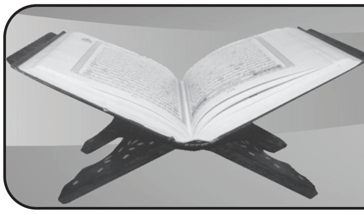

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवादः- 78-क्या मनुष्य को ज्ञात नहीं कि हम ने उसे वीर्य से पैदा किया है, फिर वह पैदा होने के बाद अचानक सख़्त झगड़ालू बन जाता है। 79-और हमारी सत्ता के बारे में बातें बनाने लग जाता है तथा अपनी पैदाइश (के उद्देश्य) को भूल जाता है और कहने लग जाता है किजब हड्डियाँ सड़-गल जाएँगी तो भला उन्हें कौन जीवित करेगा? 80-तू कह दे कि ऐसी हड्डियों को वही जीवित करेगा जिस ने उन को पहली बार पैदा किया था और वह हर-एक प्रकार की मख़्लूक़ की हालत को भली-भाँति जानता है। 81-वह (अल्लाह) जिस ने तुम्हारे लिए हरे वृक्षों में से आग पैदा की है। सो तुम उस के आधार पर आग जलाते हो। 82-क्या वह जिस ने आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि की है इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता कि उन जैसी दूसरी मख़्लूक़ पैदा कर दे? ऐसा विचार (कि वह पैदा करने में असमर्थ है) सत्य नहीं, अपितु वह बहुत पैदा करने वाला (और) बहुत जानने वाला है। 83-उस की बात तो यूँ है कि जब कभी वह यह इरादा कर लेता है कि अमुक चीज़ हो जाए तो वह उस के बारे में यह कहता है कि इस प्रकार हो जाए तो वह उसी प्रकार हो जाती है। (सूरह यासीन : 78-83)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवादः हज़रत बरा वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के अवसर पर पचास धनुर्धारियों को अब्दुल्लाह बिन जुबैर की निगरानी में एक पहाड़ी दर्रे की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया और उन्हें ताकीद फरमाई कि जब तक मैं अपना आदमी भेज कर तुम को न बलाऊँ तुम अपनी जगह से नहीं हटना चाहे हम सब शहीद हो जाएं और पक्षी हमें नोच नोच कर खाना शुरू कर दें या चाहे हम लोग जीत जाएं तुमने किसी भी सूरत में अपनी जगह नहीं छोड़नी। बरा कहते हैं कि अल्लाह तआला ने काफिरों को हराया और मैंने काफिरों की महिलाओं को देखा कि वे पहाड़ पर चढ़ी जा रही हैं। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथी कहने लगे 'लूट का माल' अर्थात क़ौम लूट का समान जमा कर रही है। क़ौम विजय पा चुकी है अब इंतजार किस बात का चलो चल कर हम भी लूट का सामान इकट्ठा करें। अब्दुल्लाह बिन जुबैर कहने लगे कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान भूल गए हो? इस पर उनके साथी कहने लगे लोग सब लूट का समान ले जायेंगे और यह कहते हुए उन लोगों ने वह जगह छोड़ दी। इस अवज्ञा के कारण उनकी जीत हार में बदल गई और मुसलमानों का काफी नुकसान हुआ। (अबु दाऊद किताबुल जिहाद)

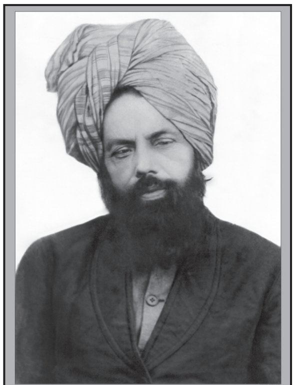

Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah (as)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

लानत का अर्थ

ईसाई चूँकि लानत के अर्थ और अभिप्राय से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। इसलिए मसीह को लानती ठहराते समय उन्होंने कुछ न सोचा कि इस लानत का क्या अंजाम होगा? इसके अलावा अरबी भाषा से उन्हें द्वेष था इसलिए इब्रानी में भी पूरी महारत न हासिल कर सके। चूँकि यह दोनों भाषाएँ एक ही वृक्ष की शाखाएं हैं और अरबी जानने वाले के लिए इब्रानी का समझना बहुत आसान है। लेकिन ईसाई अरबी भाषा से द्वेष रखने के कारण इब्रानी शब्दकोष से भी फ़ायदा न उठा सके।

लानत का अर्थ यह है कि कोई ख़ुदा तआला से पूर्णत: विमुख हो जाए और ख़ुदा तआला उससे पूर्णत: विमुख हो जाए। ईसाइयों के अपने छापाख़ाना की छपी हुई शब्दकोष की पुस्तकें जो बेरूत से आयी हैं उनमें भी लानत के यही अर्थ लिखे हुए हैं और 'लईन' शैतान को कहते हैं। मुझे उन लोगों की समझ पर बड़ा अफ़सोस होता है कि उन्होंने अपने मतलब के लिए एक महान नबी का घोर अपमान किया है और उसको लानती ठहराया है और उन्होंने इस पर कुछ भी चिन्तन-मनन नहीं किया कि लानत का सम्बन्ध दिल से होता है। जब तक दिल ख़ुदा से दूर न हो कोई लानती नहीं हो सकता। अब किसी ईसाई से पूछो कि क्या अरबी और इब्रानी दोनों शब्दकोषों में यह अर्थ पाए जाते हैं या नहीं? फिर यदि दिल में दुष्टता और हठधर्मी नहीं है और केवल ख़ुदा तआला के प्रेम के लिए एक मज़हब को अपनाया जाता है तो क्या एक शब्दकोष ही का अर्थ ईसाई मज़हब को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए पर्याप्त नहीं है? पहले सोचें कि जब यह बात सर्वमान्य थी और पहले तौरैत में कहा गया था कि वह जो काठ की लकड़ी पर लटकाया गया वह लानती है और झूठा है तो बताओ जो ख़ुद लानती और झूठा ठहर गया वह दूसरों की अनुशंसा क्या करेगा?

او خوشتن گم است کرا رہبری کُند

अनुवाद- वह ख़ुद गुम है किसी को राह क्या दिखाएगा (अनुवादक)

मैं सच कहता हूँ कि जब से उन ईसाइयों ने ख़ुदा को छोड़कर ख़ुदाई का ताज एक असहाय इन्सान के सिर पर रख दिया है, अन्धे हो गए हैं उनको कुछ दिखाई नहीं देता। एक तरफ़ उसे ख़ुदा बनाते हैं दूसरी तरफ़ उसे सलीब पर चढ़ाकर लानती ठहराते हैं और फिर तीन दिन के लिए दोज़ख़ (नर्क) में भी भेजते हैं। क्या वे दोज़ख़ में दोज़ख़ियों को नसीहत करने गए थे या उनके लिए वहाँ जाकर कफ़्फ़ारा बनना था?" (मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

(अरबी से अनुवाद) क्या तुम नहीं देखते कि तुम कितने मार्गों पर चले तथा कितने लोगों को तुम ने मार डाला और कितनी बिदअतें तुमने अविष्कृत कीं और कितनी क़ौमों को धोखा दिया तथा कितने सम्मान रोंद डाले और कितने धोखेबाज़ों को तुम ने मात (पराजय) दी। परन्तु अब सच प्रकट हो गया है और दयालु रब्ब ने दया की तथा अमावस्या की घोर अंधकारमय रात प्रकाशमय हो गई और सुदृढ़ धर्म स्पष्ट हो गया तथा तुम्हारी अप्रियता के विपरीत अल्लाह की बात प्रकट हो गयी। अल्लाह की हर पल पर दृष्टि है अत: उसने अपने धर्म पर दया-दृष्टि डाली। उसने इस (धर्म) को दुश्मनों के तीरों का निशाना पाया तथा उसे ऐसी अवस्था में पाया कि वह एक छाया एवं जल रहित रेगिस्तान में अकेला और असहाय है। इस पर अल्लाह ने अपनी विशेष कृपा से इस गरीबी और बेबसी के युग में मुझे खड़ा किया ताकि वह मुसलमानों को समृद्ध करे और उन्हें वह कुछ दे जो उनके बाप-दादों को न दिया गया था। और निर्बलों पर दया करे तथा वही हस्ती है जो समस्त दया करने वालों से अधिक दया करने वाली है।

मैं इस (इमामत के) पद पर शक्तिमान एवं शक्तिशाली ख़ुदा के आदेश से ही खड़ा हुआ हूँ जो इमाम अवतरित करता है और वह समय (की आवश्यकता) को जानता है। वह दूरदर्शी एवं सर्वज्ञ (ख़ुदा) पथ भ्रष्टता तथा गुमराही के युग को और स्त्रियों एवं पुरुषों में फसाद की तीव्र वायु (आंधी) को अच्छी तरह देखता है। गुनाहों में आगे बढ़ने में प्रजा अपनी चरम सीमा को पहुंच गई और अपनी सवारियों की पीठों को घायल कर दिया तथा सच को कोनों-खुदरों में दफ्न कर दिया और झूठ शीशों की भांति चमक उठा। यह सब सृष्टि के स्त्रष्टा ने देखा तब उसने अपने बन्दों में से एक बन्दे को इस उपद्रव के अवसर पर अवतरित किया। हे बैर और शत्रुता के अंगारो! क्या तुम उसके फ़ज़्ल (कृपा) पर आश्चर्य करते हो। अत: सन्देहों और कुधारणाओं पर भरोसा न करो। ख़ुदा के भेद गुप्त मोती की भांति हैं। वह हर युग में अपने बन्दों की परीक्षा लेता है। और उसकी हर समय एक शान है और मैं उस हस्ती की क़सम खाता हूं जो समस्त गुप्त बातों को भली भांति जानने वाली तथा सच्चे पुरुषों और स्त्रियों की सहायता करने वाली है कि मैं अल्लाह की ओर से हूं। जो कायनात का रब्ब है जिसकी प्रतिष्ठा से पृथ्वी थरथराती है और जिसके रोब से आकाश फट जाता है। किसी लानती झूठे के लिए यह संभव नहीं कि वह ख़ुदा पर झूठ गढ़ने के बावजूद एक लम्बी आयु पाए। इसलिए ख़ुदा और उसकी हस्ती के प्रताप से डरो। क्या तुम्हारे अन्दर संयम (तक्वा) का कोई कण तक शेष नहीं रहा, क्या तुम जीभ को लगाम देने की नसीहत और परलोक के डर को भूल गए हो? हे कुधारणा करने वालो! आओ और प्रकाश से मत भागो! हे मेरी क़ौम! मैं अल्लाह की ओर से हूं, मैं अल्लाह की ओर से हूं, मैं अल्लाह की ओर से हूं तथा मैं अपने रब्ब को गवाह बनाता हूं, निस्सन्देह मैं अल्लाह की ओर से हूं। मैं अल्लाह, उसकी किताब फुर्क़ान हमीद (क़ुर्आन) और हर उस बात पर ईमान लाता हूं जो जिन्नों और इन्सानों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध है और मैं

सदी के सर पर अवतरित किया गया हूं ताकि मैं धर्म का नवीनीकरण (तज्दीद) करने और मिल्लत के चेहरे को प्रकाशमान करूँ। अल्लाह इस पर गवाह है और वह जानता है कि कौन दुर्भाग्यशाली है तथा कौन सौभाग्यशाली। हे जल्दबाजों के गिरोह! अल्लाह से डरो क्या तुम में कोई भी विनम्रता ग्रहण करने वाला नहीं। क्या तुम शेरों पर आक्रमण करते हो? और सर्वप्रिय तथा बहिष्कृत के बीच अन्तर नहीं करते। उम्मते (मुस्लिमा) में एक वर्ग ऐसा भी है जो अद्वितीय लोगों में सम्मिलित है। उनका रब्ब उनसे प्रेम एवं प्यार के साथ वार्तालाप करता है और जो उन से दुश्मनी करे उनसे वह दुश्मनी करता है और जो उन से दोस्ती करे उनसे दोस्ती करता है और वह उन्हें खिलाता-पिलाता है और वह उनके साथ होता है और उन पर साया डालने वाला (सहायक) होता तथा उनका हो जाता है और वे समस्त संसारों (लोकों) के प्रतिपालक की गोद में आ जाते हैं। उन्हें अपने प्रतिपालक की ओर से ऐसे रहस्य मिलते हैं जिन्हें उनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। उनके दिल प्रियतम के प्रेम में उन्मत होते हैं और वे अपने बंधित एवं अमिष्ट का मिलन प्राप्त कर लेते हैं। उनके अन्त:करण को प्रकाशमान किया जाता है और उनके प्रत्यक्ष को निंदा किए जाने वालों में छोड़ दिया जाता है। अत: मुबारक हो उस नौजवान को जो उनके शिष्टाचार अपनाता है तथा जिसकी हर प्रकार की युक्ति उनके सामने समाप्त हो जाती है और वह (जवान) सत्यनिष्ठों की संगत के लिए सच्चाई के घोड़े पर सवार होता है।

यह है हमारे लेख और किताब जो हमने तुम्हारे लिए लिखी। अत: जब तुम्हें यह मिले तो इसका उत्तर लिखो। सारांश यह है कि हम मुक़ाबले के लिए तैयार हैं ताकि हम तुम्हें तुम्हारी धनुर्विद्या (तीर चलाने) का स्वाद चखाएं। जिसने सुशील लोगों को कष्ट दिया तो उसने स्वंय को तबाह और बरबाद कर लिया। मेरी बात सुनो! मैं इस प्रतीक्षा में हूं कि तुम इनाम की राशि जमा करो। जब तुम रक़म जमा कर लो और मांग पूरी कर लो तो फिर जान लो कि **अहमद** तुम पर आक्रमणकारी हो गया और तुम्हें वबाल और इब्रत (सीख) दिखा दी। हे कंगाल! ईसा की मौत स्पष्ट आदेशों में से है जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं। और इस से इन्कार करना बहुत बड़ी मूर्खता है। परन्तु तुम्हारे दिल को ज़ंग लग चुका है और पर्दे मोटे हो चुके हैं। तूने इन्कार किया और तुझ पर समस्त दरवाज़े बन्द हो गए जिसके कारण तुम नसीहतों पर कान नहीं धर रहे और क्रोध में लाने वाली बातों की भांति सच तुम्हें कष्ट देता है। तुम्हें तुम्हारी पुस्तक पर गर्व और अभिमान ने मार दिया तथा यही तुम्हारी तबाही का मूल कारण है। मैं तुम्हारे रहस्य (राज़) और उसकी पहेली को जान चुका हूं। चाहे दूसरे लोग इसके अर्थ (उद्देश्य) को न समझ पाए हों। तुम्हारा उद्देश्य केवल मूर्खों के दिलों में फूट पैदा करना तथा अशिक्षित लोगों को चकमा देना है ताकि तुझे दुर्भाग्यशाली वर्ग में सम्मान प्राप्त हो और तू अपनी इच्छाओं में सफल हो। हम अपनी बात समाप्त करते हैं। अत: बुद्धिमानों के समान सोच-विचार कर और अंधों के समान मत बैठ।

अल्लाह तुझे हिदायत दे क्या तुम जनता को प्रसन्न करना चाहते हो ताकि तुम इस प्रकार उनसे सांसारिक लाभ प्राप्त कर सको।

क्या मिल्लत-ए-इस्लामी में तुम्हारी उन बातों का कोई प्रभाव है जिन से तुम मुकाबला करना चाहते हो।

क्या तुम्हारे पास उस क़ौम के इज्मा का कोई सबूत है, जिसने मुर्खता और अन्याय से सच्चाई को नष्ट कर दिया।

वह उम्मत तुम जैसी थी जिसने हुसैन रज़ि. को उस समय क़त्ल कर दिया जब उन्होंने यह पाया कि वह अनुपम इमाम हैं। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 48-53)

सम्पादकीय

हे समझदार लोगो ! तुम इस बात पर आश्चर्य मत करो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आगमन के बारे में अपनी एक पुस्तक में फरमाते हैं :

"हे समझदार लोगो ! तुम इस बात पर आश्चर्य मत करो कि ख़ुदा तआला ने इस ज़रूरत के समय में और इस घोर अंधकार के दिनों में एक आसमानी प्रकाश भेजा और एक भक्त का मानवजाति की भलाई के लिए चयन करके इस्लाम का नाम ऊँचा करने, हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) का प्रकाश फैलाने और मुसलमानों की सहायता के लिए, इसी प्रकार उन की अन्दरूनी हालत को साफ करने के इरादे से संसार में भेजा। हैरानी तो इस में होती कि वह ख़ुदा जो इस्लाम धर्म का समर्थक है, जिसने वादा किया था कि मैं सदा क़ुर्आन की शिक्षा का संरक्षक रहूँगा और इसे प्रभावहीन, मलिन और प्रकाशहीन नहीं होने दूँगा, वह इस अंधेरे को देख कर और इन अन्दरूनी और बैरूनी फसादों पर दृष्टि डाल कर चुप रहता और अपने उस वायदे को याद न करता जिसको अपनी पवित्र वाणी में पक्के तौर पर वर्णन कर चुका था। फिर मैं कहता हूँ कि यदि अश्चर्य की जगह थी तो यह थी कि उस पाक रसूल की यह साफ और स्पष्ट भविष्यवाणी व्यर्थ जाती जिस में फर्माया गया था कि प्रत्येक शताब्दी के प्रारम्भ में ख़ुदा तआला एक ऐसे भक्त को पैदा करता रहेगा कि जो उस के धर्म का सुधार करेगा। अत: यह आश्चर्य की बात नहीं अपितु हज़ारों धन्यवाद का स्थान और ईमान और आस्था के बढ़ाने का समय है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल और कृपा से अपने वायदे को पूरा कर दिया और अपने रसूल की भविष्यवाणी में एक मिनट का भी अन्तर नहीं आने दिया। न केवल इस भविष्यवाणी को पूरा करके दिखाया अपितु भविष्य के लिए भी हज़ारों भविष्यवाणियों और चमत्कारों का दरवाज़ा खोल दिया। यदि तुम ईमानदार हो तो धन्यवाद करो और शुक्र के सज्दे करो कि वह ज़माना जिसकी प्रतीक्षा करते-करते तुम्हारे पूर्वज मृत्यु को प्राप्त हो गये और अनगिनत आत्माऐं उसकी चाहत में ही प्रस्थान कर गईं, वह समय तुम ने पा लिया। अब इस की कद्र करना अथवा न करना और इस से लाभ उठाना अथवा न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसका बार-बार वर्णन करूँगा और इसकी चर्चा से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो यथा समय मानवजाति के सुधार के लिए भेजा गया। ताकि धर्म को ताज़ा तौर पर दिलों में क़ायम कर दिया जाये।

मैं उसी प्रकार भेजा गया हूँ जिस प्रकार से वह व्यक्ति कलीमुल्लाह मर्दे ख़ुदा (अर्थात हज़रत मूसा(अ)) के बाद भेजा गया था जिसकी आत्मा हेरोडेस के शासनकाल में बहुत कष्ट उठाने के बाद आसमान की ओर उठाई गई। अत: जब दूसरा कलीमुल्लाह जो वास्तव में सब से पहला और नबियों का सरदार है दूसरे फिरऔन का सर कुचलने के लिए आया, जिस के बारे में है

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا (अलमुज़्ज़म्मिल:16)

(अर्थात:- हम ने तुम्हारी ओर एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर निगरान है उसी तरह जिस तरह हम ने फिरऔन की तरफ रसूल भेजा था। -अनुवादक) (फतह इस्लाम पृष्ठ 4-5)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

फ़ज़ाइले क़ुर्आन मजीद

जमालो[5] हुस्ने कुरआँ नूर-ए-जाने हर मुसल्माँ है
क़मर[6] है चांद औरों का हमारा चांद क़ुरआँ है
नज़ीर[7] उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता[8] कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ[9] पैदा है उसकी हर इबादत[10] में
न वो ख़ूबी चमन[11] में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
कलामे[12]-पाके-यज़दाँ का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए[13] अम्मा है वगर लअले बदख़्शाँ है
ख़ुदा के कौल[14] से कौले बशर[15] क्योंकर बराबर हो
वहाँ क़ुदरत यहाँ दरमान्दगी[16] फ़र्क़े नुमायाँ है
मलायक[17] जिसकी हज़रत में करें इक़रारे-ला-इल्मी[18]
सुखन[19] में उसके हमताई[20], कहाँ मक्दूरे इन्साँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर[21] हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूहे हक़ का उस पे आसाँ है
अरे लोगो ! करो कुछ पास शाने किब्रियाई का
ज़ुबाँ[21] को थाम लो अब भी अगर कुछ बूए[2] ईमाँ है
ख़ुदा से ग़ैर को हम्ता[3] बनाना सख़्त कुफ्राँ है
ख़ुदा से कुछ डरो यारो, ये कैसा किज़बो[4] बुहताँ है
अगर इकरार है तुम को ख़ुदा की ज़ाते वाहिद का
तो फिर क्यों इस क़दर दिल में तुम्हारे शिर्क पिन्हाँ[6] है
ये कैसे पड़ गए दिल पर तुम्हारे जहल[7] के पर्दे
ख़ता करते हो बाज़ आओ अगर कुछ ख़ौफ़े यज़दाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाइयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे क़ुरबाँ

(बराहीन अहमदिया, भाग 3, पृ. 183, प्रकाशन 1882 ई. रूहानी ख़ज़ायन भाग 1, पृ. 198)

---

5. ख़ूबसूरती। 6. चन्द्रमा। 7. उपमा। 8. बेमिसाल। 9.चिरकाल की बसन्त। 10. पंक्ति। 11. बाग़। 12. ख़ुदा। 13. मरकन मणि। 14. कथन। 15. मानव। 16. कमज़ोरी। 17. फ़रिश्ते। 18. अज्ञानता। 19. कथन। 20. बराबरी। 21.मानव।

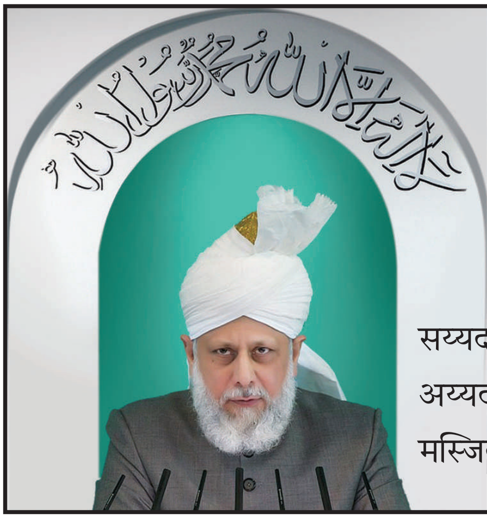

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 20.9.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

लिक़ा (ईश-दर्शन) के स्तर पर कई बार मानव से ऐसी बातें घटित हो जाती हैं जो कि मानव सामर्थ्य से बढ़ी हुई प्रतीत होती हैं तथा ईश्वरीय शक्ति अपने भीतर रखती हैं। ख़न्दक नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी सअव का बयान।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अहज़ाब की लड़ाई के संदर्भ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन के सम्बंध में वर्णन हो रहा था। पिछले ख़ुत्ब: में मैंने भोजन में बरकत की घटना का वर्णन किया था। इसी तरह खजूरों में बरकत का भी वाक़िया मिलता है। हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. की बेटी बयान करती हैं कि मेरी माँ ने मेरे कपड़ों में थोड़ी सी खजूरें देकर मुझे कहा कि ये अपने बाप तथा मामूं को दे आओ और कहना कि यह तुम्हारा सुबह का खाना है। वे कहती हैं कि मैं वह खजूरें लेकर अपने पिता एवं मामूं को ढूंडते हुए आँहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट से गुज़री तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ लड़की! ये तेरे पास क्या चीज़ है? मैंने निवेदन पूर्वक कहा कि खजूरें हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लाओ! ये खजूरें मुझे दे दो। मैंने वह खजूरें आप स. के दोनों हाथों में रख दीं। आप स. ने उन खजूरों को दो कपड़ों से ढक दिया। फिर आप स. ने एक व्यक्ति को कहा कि सब लोगों को खाने के लिए बुला लो। अत: सब लोग आ गए और खजूरें खाने लगे तथा वे खजूरें अधिक होने लगीं, यहाँ तक जब सब खा चुके तो खजूरें कपड़ों के किनारों से गिर रही थीं।

भोजन में बरकत की एक अन्य घटना बयान करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के हवाले से 'सालिक' (ईशप्रेम में लीन होने के लिए तत्पर मनुष्य) के स्तर तथा 'लिक़ा'

(ईश्वर से भेंट) के स्तर के सम्बंध में फ़रमाया कि वह ख़ुदा की ऐसी निकटता प्राप्त कर लेता है कि जैसे आग लोहे के रंग को अपने नीचे ऐसा छिपा लेती है कि प्रत्यक्षत: आग के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता। फ़रमाया कि इस स्तर की घनिष्टता में कई बार मनुष्य से ऐसी बातें भी प्रकट हो जाती हैं कि जो मानव शक्ति से बढ़ी हुई प्रतीत होती हैं तथा इलाही शक्ति अपने अन्दर रखती हैं। जैसे हमारे सय्यद व मौला सय्यदुर्रसुल हज़रत ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के युद्ध में एक कंकरियों की मुट्ठी काफ़िरों पर चलाई और वह मुट्ठी किसी दुआ के द्वारा नहीं बल्कि अपनी रूहानी शक्ति से चलाई, किन्तु मुट्ठी ने खुदाई शक्ति दिखलाई तथा विरोधी सेना पर ऐसा चमत्कारी प्रभाव पड़ा कि कोई उनमें से ऐसा न रहा कि जिसकी आँख तक उसका प्रभाव न पहुंचा हो। इस प्रकार की अन्य अनेक चमत्कारी घटनाएँ हैं जो केवल व्यक्तिगत सामर्थ्य के रूप में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखलाई तथा जिनके साथ कोई दुआ न थी।

ख़न्दक़ की खुदाई के समय कई पाखंडियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों के साथ खुदाई के काम में सुस्ती की तथा वे थोड़ा सा काम करते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताए तथा अनुमति के बिना घरों को खिसक जाते। जबकि मोमिनों को यदि कोई आवश्यकता आ जाती तो वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आज्ञा मांग लेते तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें अनुमति दे देते।

रिवायतों के अनुसार अबू सुफ़यान की सेना के आगमन से तीन दिन पहले ख़न्दक़ तय्यार हो चुकी थी। अब योजना के अनुसार बच्चों तथा युवाओं को उन क़िलों की ओर भेज दिया गया जहाँ महिलाओं को सुरक्षा की दृष्टि से रखा गया था। परन्तु जिनकी आयु पन्द्रह वर्ष से अधिक थी उन्हें अनुमति दे दी गई कि यदि चाहें तो यहाँ रहें और चाहें तो क़िलों की ओर चले जाएँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने में अपना नायब इब्ने उम्मे मकतूम रज़ी. को बनाया। ख़न्दक़ के पास आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए चमड़े का एक तम्बू लगाया गया। मुहाजिरों का झंडा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. जबकि अन्सार का झंडा हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. के पास था। मुसलमानों की संख्या के विषय में इतिहासकारों ने बड़ा मतभेद किया है तथा यह संख्या सात सौ से लेकर तीन हज़ार तक बयान हुई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. अपनी बुद्धि एवं विवेक से इन समस्त कथनों की समीक्षा करते हुए फ़रमाते हैं कि अहज़ाब नामक युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग इसका वह था जब अभी दुश्मन मदीने के सामने नहीं आया था तथा ख़न्दक़ खोदी जा रही थी। इस काम में कम से कम मिट्टी ढोने की सेवा बच्चे भी कर सकते थे तथा कुछ महिलाएँ भी यह काम कर सकती थीं। अतएव जब तक ख़न्दक़ खोदने का काम रहा, मुसलमानों की सेना तीन हज़ार की संख्या में थी। फिर जब दुश्मन आ गया तथा लड़ाई शुरु हो गई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन सभी लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष की आयु से कम थे, उन्हें चले जाने का आदेश दिया तथा जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे तो ठहरें, चाहें तो वापस चले जाएँ। इस रिवायत से ज्ञात होता है कि ख़न्दक़ खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी और

युद्ध के समय कम हो गई। बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध आरम्भ हो गया। जब युद्ध के दौरान बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना के साथ मिल गए तथा उन्होंने निश्चय किया कि अचानक मदीने पर हमला कर दें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने की इस दिशा की सुरक्षा भी आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे। इतिहास के पता चलता है कि इस अवसर पर आप स. ने दो सैन्य दल महिलाओं की सुरक्षा के लिए रवाना किए, जिनमें से एक सेना दो सौ, जबकि दूसरी सेना तीन सौ सैनिकों पर आधारित थी। इस तरह जब बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ सैनिक महिलओं की सुरक्षा के लिए चले गए तो बारह सौ वाली सेना सात सौ की संख्या में रह गई।

अबू सुफ़यान के नेतृत्व में क़बीलों की सेनाओं ने मदीने पहुंच कर ख़न्दक़ के चारों ओर डेरे डाल दिए। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि काफ़िरों की सेना मदीने के निकट पहुंची तो अपने सामने ख़न्दक़ को पा कर चकित रह गई। अतएव काफ़िरों ने ख़न्दक़ के चारो ओर घेराव के रंग में डेरे डाल दिए तथा ख़न्दक़ के कमज़ोर भागों से हमला करने का अवसर खोजने लगे। जब दुश्मन ख़न्दक़ को पार करने में असफल रहा तो अन्य चालें चलने लगा। मुशरिकों ने आपस में योजना बनाई कि क़बीला बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लिया जाए ताकि वह मुसलमानों के साथ किए अपने वादे को ताड़ दें तथा मुसलमानों पर भीतर से हमला कर दें। अत: इस भयानक षड्यन्त्र को व्यवहारिक रूप देने के लिए हुयी बिन अख़तब बनू क़ुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद के पास गया। आरम्भ में कअब ने हुयी के लिए अपना द्वार भी न खोला तथा साफ़ साफ़ उत्तर दिया कि मैं मुहम्मद (सअव) के साथ समझौता कर चुका हूँ तथा मैंने मुहम्मद (सअव) को सदैव वादों को पूरा करने वाला पाया है। फिर भी हुयी के अत्यधिक आग्रह पर कअब ने न केवल द्वार खोल दिया बल्कि उसके उकसाने पर मुसलमानों के विरुद्ध इस भयावह षड्यन्त्र में शामिल भी हो गया तथा मुसलमानों के साथ की हुई सन्धि को तोड़ दिया।

इस अवसर पर यहूदियों में से बनू क़ुरैज़ा के कुछ लोग जो नेक प्रकृति के थे, वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चले गए तथा इस्लाम भी क़बूल कर लिया। जब उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. के माध्यम से रसूलुल्लाह को बनू क़रैज़ा के समझौते को तोड़ने की सूचना मिली तो आप स. ने बनू क़ुरैज़ा के पास सअद बिन मुआज़ रज़ी. तथा सअद बिन अबादा रज़ी. को कुछ अन्य सहाबियों के साथ भिजवाया तथा उन्हें निर्देश दिया कि यदि यह सूचना सच हो तो सबके सामने ऊँची आवाज़ में न बताना, बल्कि संकेत की भाषा में बात बताना। जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के पास पहुंचे तो कअब बिन असद इन लोगों के साथ बड़े अपमान जनक व्यवहार के साथे पेश आया तथा समझौते का पूर्णत: इंकार कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि वह दुष्ट (कअब बिन असद) इस प्रतिनिधि मंडल से अत्यंत अहंकार के साथ मिला तथा सअदैन की ओर से समझौते के बारे में इसने तथा क़बीले के अन्य लोगों ने कहा कि जाओ! हमारा तुम्हारा कोई समझौता नहीं हुआ है। कअब बिन असद का जवाब सुनने के बाद इस प्रतिनिधि मंडल ने वापस आकर संकेत से आँहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को

बनू क़ुरैज़ा के सन्धि विच्छेद के विषय में बता दिया। आँहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन मानसिक स्थिति को भंग तथा अचेत हो जाने वाले क्षणों में कुछ देर चुप रहे तथा इस ख़बर का आप स. पर कोई प्रभाव न हुआ। कोई सामान्य मनुष्य होता तो मानसिक रूप से टूट जाता। परन्तु थोड़ी देर के अन्तराल के बाद आप स. ने फ़रमाया कि ऐ मोमिनों की जमाअत! अल्लाह तआला की मदद तथा सहयोग के साथ ख़ुश हो जाओ, मुझे आशा है कि एक समय आएगा कि मैं ख़ाना-ए-कअबा की परिक्र मा कर रहा हूँगा तथा उसकी चाबियाँ मेरे हाथ में होंगी और क़ैसर व किसरा (पूराने ज़माने के दो महान शासन) अवश्य नष्ट हो जाएँगे।

ख़न्दक़ वाले युद्ध का विवरण आगे जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़रे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज से ख़ुद्दामुल अहमदिया का इज्तिमा भी शुरु हो रहा है। ख़ुददाम इससे पूर्णत: लाभान्वित होने का प्रयास करें, यद्यपि मौसम की भविष्य वाणी यही है कि सम्भवत: वर्षा होती रहे, किन्तु अल्लाह तआला हर हाल में फ़ज़्ल फ़रमाए तथा समस्त प्रोग्राम उनके सुविधा पूर्वक हो जाएँ। ख़ुद्दाम इन दिनों में रूहानी तथा ज्ञान वर्धक प्रतिभाओं को बढ़ाने की भी कोशिश करें। जिन दुआओं तथा दरूद की ओर मैंने ध्यान दिलाया था एवं प्रेरणा दी थी, इन दिनों में उनकी ओर विशेष ध्यान रखें तथा सदैव उन्हें दोहराते रहें।

ख़ुत्ब: के अन्तिम भाग में हुज़ूरे अनवर ने चार मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई-

१- मुकर्रम हबीबुर्रहमान ज़ेरवी साहब (वाक़िफ़े ज़िन्दगी) ऑफ़ रबवा। मृतक अपनी मृत्यु के समय नायब नाज़िर दीवान के पद पर सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे।

२- मुकर्रम शेख़ डा. रियाज़ुल हसन साहब सुपुत्र ब्रिगेडियर डा. ज़ियाउल हसन साहब मरहूम। मरहूम को वाक़िफ़े ज़िन्दगी के रूप में लगभग बीस वर्ष से अधिक अवधि तक अफ़रीक़ा तथा पाकिस्तान में मानव सेवा का सामथ्र्य मिला।

३- मुकर्रम प्रो. अब्दुल जलील सादिक़ साहब रबवा। मरहूम अपनी मृत्यु के समय सदर अन्जुमन अहमदिया रबवा में इंचार्ज तर्तीब व रिकार्ड के रूप में (नायब नाज़िर) की तौफ़ीक़ पा रहे थे।

४- मुकर्रम मास्टर मुनीर अहमद साहब ऑफ़ झंग, मरहूम को लम्बी अवधि तक विभिन्न जमाअती सेवाओं का सुअवसर मिलता रहा, असीरान (अहमदियत के कारण जेल में बन्द व्यक्ति) की सेवा के हवाले से मरहूम को अत्यंत प्रशंसनीय सेवा की तौफ़ीक़ मिली। हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

क़यामत (प्रलय) की निशानी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अहमदिया समुदाय के संस्थापक की कलम से

(लेख लिखने की तिथि- 1892 ई) अनुवादक- डॉ अंसार अहमद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

प्रलय के निकट आने की निशानियों में से एक बड़ी निशानी यह है जो इस हदीस से ज्ञात होती है जिसको इमाम बुख़ारी अपनी सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस से वर्णन करते हैं और वह यह है -

يُقبص العلم بقبض العلماء حتى اذا لم يبق عالم اتخذ الناس رؤسًا جُهالًا فسُئِلوا فافتوا بغير علم فضلّوا واَضلّوا

अर्थात् उलेमा की मृत्यु हो जाने के कारण ज्ञान की मृत्यु हो जाएगी, यहां तक कि जब कोई आलिम (विद्वान) नहीं मिलेगा तो लोग अनपढ़ों को अपना अनुकरणीय और सरदार बना लेंगे और धार्मिक मामलों के फैसले के लिए उनकी ओर जाएंगे। तब वे लोग मूर्खता और अयोग्यता के कारण सच्चाई और भलाई की पद्धति के विपरीत फ़त्वा देंगे। तब स्वयं भी गुमराह होंगे तथा दूसरों को भी गुमराह करेंगे। फिर एक अन्य हदीस में है कि उस युग के फ़त्वा देने वाले अर्थात् मौलवी मुहद्दिस और इस्लामी धर्मशास्त्र के विद्वान उन समस्त लोगों से अधिक बिगड़े होंगे जो पृथ्वी पर रहते होंगे। फिर एक और हदीस में है कि वे क़ुर्आन पढ़ेंगे और क़ुर्आन उन के गलों से नीचे नहीं उतरेगा अर्थात् उस का पालन नहीं करेंगे। ऐसा ही इस युग के मौलवियों के बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं परन्तु इस समय हम बतौर नमूना उस हदीस का सबूत देते हैं जो ग़लत फ़त्वों के बारे में हम ऊपर लिख चुके हैं ताकि हर एक को मालूम हो कि आजकल यदि मौलवियों के होने से कुछ लाभ है तो केवल इतना कि उनके ये लक्षण देख कर क़यामत याद आती है और क़यामत के निकट होने का पता लगता है। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी की पूर्ण सत्यता हम अपनी आंखों से स्वयं देखते हैं।

इस संक्षेप का विवरण यह है कि चूंकि गत वर्ष अधिकांश लोगों के मशवरे से यह बात निर्णय पाई थी कि हमारी जमाअत के लोग कम से कम वर्ष में एकबार धार्मिक आवश्यकताओं, इस्लाम की सरबुलंदी के मशवरे और शरीअत से लाभान्वित होने की नीयत से इस खाकसार से मुलाक़ात करें और उस मशवरे के समय यह भी हितकारी समझकर निश्चित किया गया था कि 27 दिसम्बर को इस उद्देश्य से क़ादियान में आना अधिक उचित और उत्तम है क्योंकि ये छुट्टी के दिन हैं। नौकरी पेशा लोग इन दिनों में फुर्सत रखते हैं और सर्दी के दिनों के कारण ये दिन सफर के लिए अनुकूल भी हैं। अत: लोगों और सच्चे दोस्तों ने इस मशवरे पर सहमत होकर प्रसन्नता व्यक्त की थी और कहा था कि यह उचित है। अब 7 दिसम्बर 1892 ई. को आधार पर इस ख़ाकसार ने एक पत्र बतौर विज्ञापन समस्त सच्चे मित्रों

की सेवा में भेजा जो रियाज़ हिन्द प्रेस क़ादियान में छपा था जिस के विषय का सारांश यह था कि इस जल्से के उद्देश्यों में से एक बड़ा उद्देश्य यह भी है ताकि प्रत्येक सच्चे दोस्त को आमने-सामने आकर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो और उनकी धार्मिक जानकारियों में वृद्धि हो और मारिफ़त बढ़े। अब सुना गया है कि इस कार्रवाई को बिदअत बल्कि गुनाह सिद्ध करने के लिए एक बुज़ुर्ग ने हिम्मत करके एक मौलवी साहिब की सेवा में जिनका नाम रहीम बख़्श है और लाहौर में चीनियांवाली मस्जिद के इमाम हैं, एक फ़त्वा पूछा जिसका तात्पर्य यह था कि ऐसे जल्से पर निर्धारित दिन पर दूर से सफ़र करके जाने के बारे में क्या आदेश है और ऐसे जल्से के लिए यदि कोई मकान बतौर आश्रम (ख़ानक़ाह) के निर्मित किया जाए तो ऐसे सहायता देने वाले के बारे में क्या आदेश है। फ़त्वा पूछने में यह अन्तिम बात इसलिए बढ़ाई गई कि पूछने वाले ने किसी से सुना होगा जो हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने उस मज्लिस में मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने उस मज्लिस में अपने खर्च से जो संभवत: सात सौ रुपया या इससे कुछ अधिक होगा क़ादियान में एक मकान बनवाया जिसके ख़र्च की सहायता में बिरादरम हकीम फ़ज़लदीन साहिब भैरवी ने भी तीन-चार सौ रुपया दिया है। इस फ़त्वा पूछने के उत्तर में मियां रहीम बख़्श साहिब ने एक बहुत लम्बी इबारत एक असंबंधित हदीस लम्बे सफ़र की लिखी है जिसके संक्षिप्त शब्द ये हैं कि ऐसे जल्से पर जाना बिद्अत बल्कि गुनाह है और ऐसे जल्सों का करना नई बातें पैदा करना है जिसके लिए किताब और सुन्नत में कोई गवाही नहीं और जो व्यक्ति इस्लाम में ऐसी बात पैदा करे वह बहिष्कृत है।

अब न्यायप्रिय लोग ईमानदारी से कहें कि ऐसे मौलवियों और मुफ़्तियों का इस्लाम में मौजूद होना क़यामत का लक्षण है या नहीं? हे भले मानस! क्या तुझे मालूम नहीं कि धार्मिक ज्ञान के लिए सफ़र करने के बारे में केवल इजाज़त ही नहीं बल्कि और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे फ़र्ज़ (अनिवार्य) ठहरा दिया है जिसका जान-बूझ कर त्याग करने वाला बड़े गुनाह का करने वाला और जान बूझकर इन्कार पर हठ करना और कुछ स्थितियों में कुफ़्र। क्या तुझे मालूम नहीं कि बड़ बल देकर कहा गया है कि طلبُ الْعلمِ فریضۃ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ وَّ مُسْلِمَۃ और फ़रमाया गया है कि اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ کَانَ بِالصِّیْن अर्थात् ज्ञान प्राप्त प्रत्येक मुसलमान पुरुष और स्त्री पर फ़र्ज़ है और ज्ञान को प्राप्त करो यद्यपि चीन में जाना पड़े। अब विचार करो कि जिस स्थिति में यह ख़ाकसार अपने खुले-खुले और स्पष्ट शब्दों में विज्ञापन में लिख चुका कि प्रत्येक सच्चे निष्ठावान का यह सफ़र एक ज्ञान के उद्देश्य से होगा फिर यह फ़त्वा देना कि जो व्यक्ति इस्लाम में ऐसी बात पैदा करे वह बहिष्कृत है कितनी ईमानदारी, अमानतदारी, न्याय और संयम तथा पवित्रता से दूर है। रही यह बात कि एक निर्धारित तिथि पर समस्त भाइयों का एकत्र होना तो यह केवल प्रबंध है और प्रबंधपूर्वक कोई कार्य करना इस्लाम में कोई निन्दनीय बात और बिदअत नहीं। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّات कुधारण के गन्दे माद्दे (तत्त्व) को तनिक दूर करके देखो कि एक तारीख पर आने में कौन सी बिदअत है जबकि 27, दिसम्बर को प्रत्येक सच्चा दोस्त बड़ी आसानी से हम से मिल सकता है और इस संदर्भ में उनकी आपस में मुलाक़ात भी हो जाती है तो इस

आसान ढंग से लाभ प्राप्त करना क्यों अवैध (हराम) है। आश्चर्य कि मौलवी साहिब ने इस ख़ाकसार का नाम मर्दूद (बहिष्कृत) तो रख दिया परन्तु आपको वे हदीसें याद न रहीं जिनमें ज्ञान प्राप्त करने के लिए ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफर करने के बारे में प्रेरणा दी है और जिनमें एक मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए जाना अल्लाह तआला को प्रसन्न करने का कारण बताया है और जिनमें सफ़र करके सदाचारी लोगों की ज़ियारत (दर्शन) करना पापों से क्षमा और गुनाहों से कफ़्फ़ारे का कारण लिखा है। याद रहे कि यह सरासर मूर्खता है कि लम्बे सफ़र की हदीस का यह मतलब समझा जाए कि ख़ाना काबः या मस्जिद-ए-नबवी या बैतुल मुक़द्दस के सफर के अतिरिक्त अन्य समस्त सफ़र अवैध (हराम) हैं। यह बात स्पष्ट है कि समस्त मुसलमानों को विभिन्न कारणों के लिए सफ़र करने पड़ते हैं। कभी सफ़र ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य ही से होता है और कभी सफ़र एक रिश्तेदार या भाई या बहन या पत्नी से मुलाक़ात के लिए या औरत का सफ़र अपने माता-पिता से मिलने के लिए या माता पिता का अपनी बेटियों से मिलने के लिए और कभी पुरुष अपने विवाह के लिए और कभी जीविका की तलाश के लिए और कभी सन्देश पहुंचाने के लिए और कभी नेक लोगों के दर्शन करने के लिए सफ़र करते हैं। जैसा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत **उवैस क़र्नी** से मिलने के लिए सफ़र किया था और कभी सफ़र जिहाद के लिए भी होता है चाहे वह जिहाद तलवार से हो चाहे मुबाहसे के तौर पर और कभी सफ़र मुबाहलः की नीयत से होता है जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है कि कभी सफ़र अपने पीर (धर्म गुरू) से मिलने के लिए जैसा कि हमेशा बड़े औलिया जिनमें **शैख़ अब्दुल क़ादिर** रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत **बयज़ीद वस्तामी** और हज़रत **मुईनुद्दीन चिश्ती** और हज़रत मुजद्दिद अलफ़ि सानी (बारहवीं सदी के मुजद्दिद की है) अधिकतर इस उद्देश्य से भी सफ़र करते रहे जिन के सफ़रनामे (भ्रमण-कथाएं) अधिकतर उन के हाथ के लिखे हुए अब तक पाए जाते हैं। और कभी सफ़र फ़त्वा पूछने के लिए भी होता है, जैसा कि सही हदीसों से इसका वैध होना बल्कि कुछ परिस्थितियों में अनिवार्य सिद्ध होता है। इमाम बुख़ारी के सफ़र हदीस का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध हैं शायद मियां रहीम बख़्श को ख़बर नहीं होगी। कभी सफ़र (यात्रा) दुनिया के अजूबे देखने के लिए भी होता है, जिसकी ओर पवित्र आयत -

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ (अनआम - 6/12)

(अर्थात तू कह दे कि दुनिया में घूम फिर कर देखो) संकेत कर रही है और कभी सफ़र सत्यनिष्ठों की संगत में रहने के लिए जिसकी ओर पवित्र आयत -

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ (अत्तौबः9/119)

मार्ग-दर्शन करती है और कभी सफ़र रोगी का हाल पूछने के लिए बल्कि नेक लोगों का अनुकरण करने के लिए भी होता है। और कभी रोगी या रोगी की देखभाल करने वाला इलाज कराने के लिए सफ़र करता है और कभी अदालत में मुकद्दमः अथवा व्यापार इत्यादि के लिए भी सफ़र किया जाता है। ये समस्त प्रकार के सफर पवित्र क़ुर्आन और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों

की दृष्टि से वैध (जायज़) हैं। बल्कि सदाचारी लोगों की ज़ियारत (दर्शन) और भाइयों से मुलाक़ात और ज्ञान-प्राप्ति के लिए सफर के संबंध में सही हदीसों में बहुत कुछ प्रेरणा पाई जाती है। यदि इस समय वे समस्त हदीसें लिखी जाएं तो एक पुस्तक बनती है। ऐसे फ़त्वे लिखाने वाले और लिखने वाले यह नहीं सोचते कि उनको भी तो प्राय: इस प्रकार के सफ़रों का सामना करना पड़ता है। अत: यदि तीन मस्जिदों के अतिरिक्त अन्य समस्त सफर वर्जित (हराम) हैं तो चाहिए कि ये लोग अपने सम्पूर्ण रिश्ते-नाते और निकट संबंधियों को छोड़ कर बैठ जाएं और कभी उनकी मुलाक़ात या उनकी हमदर्दी या उनकी बीमारी का हाल पूछने के लिए भी सफ़र न करें। मैं नहीं सोचता कि ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जिसे द्वेष और मूर्खता ने अंधा कर दिया हो वह इन समस्त सफ़रों (यात्राओं) के वैध होने में संकोच में पड़ सके। **सही बुख़ारी** का पृष्ठ-16 खोल कर देखो कि ज्ञान-प्राप्ति के लिए यात्रा करने की कितनी ख़ुश ख़बरी दी गई है। और वह यह है कि

من سلك طريقًا يطلب به علمًا سهل الله لهٗ طريق الجنّة

अर्थात् जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति के लिए सफ़र करे और किसी मार्ग पर चले तो ख़ुदा तआला उस पर स्वर्ग का मार्ग आसान कर देता है। अब हे ज़ालिम मौलवी! थोड़ा इन्साफ़ कर कि तू ने अपने भाई का नाम जो तेरे समान कलिमा पढ़ने वाला अहले क़िब्ल: तथा अल्लाह रसूल पर ईमान लाता है मर्दूद (बहिष्कृत) रखा और ख़ुदा तआला की रहमत और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सफ़िारिश से पूर्णतया वंचित ठहराया और बुख़ारी की उस सही हदीस की भी कुछ परवाह न की कि -

اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ خَالِصًا مِنْ قَلْبِہٖ اَوْنَفْسِہٖ

और अपने फत्वे में मर्दूद ठहराने का कारण यह बताया कि ऐसा विज्ञापन क्यों प्रकाशित किया और लोगों को जल्से पर बुलाने के लिए क्यों दावत दी हे ख़ुदा से न डरने वाले तनिक आंख खोल और पढ़ कि उस 7 दिसम्बर 1892 ई. के विज्ञापन का क्या विषय है। क्या अपनी जमाअत को ज्ञान की प्राप्ति और धार्मिक समस्याओं के समाधान और इस्लाम की हमदर्दी तथा भ्रातृवत् मुलाकात के लिए बुलाया है,या उसमें किसी अन्य मेला, तमाशा और सुर और गिटार का वर्णन है। हे इस युग के इस्लाम के बदनाम मौलवियो! तुम महा वैभवशाली ख़ुदा से क्यों नहीं डरते? क्या एक दिन मरना नहीं? या तुम को हर एक (हिसाब की) गिरफ़्त माफ़ है। सच बात को सुन कर तथा अल्लाह और रसूल के फ़रमान को देखकर तुम्हें यह विचार तो नहीं आता कि अब अपने हठ से रुक जाएं बल्कि मुक़द्दमाबाज़ लोगों की तरह यह विचार आता है कि आओ किसी प्रकार से बातें बना कर उसका खण्डन छापें ताकि लोग यह न कहें कि हमारे मौलवी साहिब को कुछ उत्तर न आया। इतनी निर्भीकता और बेईमानी और यह कंजूसी और वैर किस आयु के लिए? आप को फ़तवा लिखने के समय वे हदीसें याद न रहीं जिनमें धर्म के ज्ञान के लिए और अपने सन्देहों को दूर करने के लिए तथा अपने धार्मिक भाइयों और परिजनों को मिलने के लिए सफ़र करने को अत्यधिक पुण्य (सवाब) और बहुत बड़े प्रतफ़िल का कारण बताया है। बल्कि सदाचारी लोगों की ज़ियारत के लिए सफ़र करना हमेशा से पहले नेक लोगों की सुन्नत चली आ रही है। और

एक हदीस में है कि जब क़यामत के दिन एक मनुष्य अपने बुरे कर्मों के कारण कठोर गिरफ़्त में होगा तो अल्लाह तआला उस से पूछेगा कि अमुक सदाचारी व्यक्ति की मुलाक़ात के लिए तू कभी गया था? तो वह कहेगा कि इरादा करके तो कभी नहीं गया परन्तु एक बार एक मार्ग में उससे मुलाक़ात हो गई थी तब ख़ुदा तआला कहेगा कि जा स्वर्ग में दाखिल हो जा, मैंने उसी मुलाक़ात के कारण तुझे क्षमा कर दिया। अब हे तंग दिल मौलवी! तनिक देख कि यह हदीस किस बात की प्रेरणा देती है। यदि किसी के दिल में यह धोखा हो कि इस धार्मिक जल्से के लिए एक विशेष तिथि क्यों निर्धारित की गई ऐसा कार्य रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से कब सिद्ध है? तो इसका उत्तर यह है कि बुख़ारी और मुस्लिम को देखो कि ख़ाना बदोश (यायावर) आंहज़रत सल्लल्लाहु वसल्लम की सेवा में मसअले पूछने के लिए अपनी फ़ुर्सत के समयों में आया करते थे और कुछ विशेष-विशेष महीनों में उनके गिरोह फुर्सत पाकर रसूले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ करते थे। सही बुख़ारी में अबी जमरह से रिवायत है -

قال ان وفدعبدالقیس اتواالنبی صلی اللہ علیہ وسلّم قالو انّا نأتیك من سقة بعیدۃ ولانستطیع ان نأتیك اِلَّا فِی شھر حرامٍ

अर्थात् अब्दुल क़ैस के सन्देश लाने वालों का एक गिरोह जो अपनी क़ौम की तरफ से आए थे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि हम लोग दूर से यात्रा करके आते हैं और हराम (पवित्र) महीनों के अतिरिक्त हम सेवा में उपस्थित नहीं हो सकते। उनके कथन को क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया बल्कि स्वीकार किया। इस हदीस से भी यह मसअला निकलता है कि जो लोग ज्ञान की प्राप्ति या धार्मिक मुलाकात के लिए अपने किसी अनुकरणीय की सेवा में उपस्थित होना चाहें वे अपनी फ़ुर्सत के अनुसार एक तिथि निर्धारित कर सकते हैं जिस तिथि में वे आसानी के साथ बिना किसी हानि के उपस्थित हो सकें। और इसी स्थिति को 27 दिसम्बर की तिथि निर्धारित की गई है क्योंकि वे दिन छुट्टियों के होते हैं और नौकरी पेशा लोग उन दिनों में आसानी के साथ आ सकते हैं। और ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि इस धर्म में कोई हानि नहीं रखी गई। यह इस बात की ओर संकेत है कि यदि किसी योजना के अन्तर्गत या व्यवस्था द्वारा एक कार्य जो वास्तव में उचित एवं वैध है सरल और आसान हो सकता है तो वही योजना चुन लो कुछ भी हर्ज नहीं। इन बातों का नाम बिदअत रखना उन अंधों का काम है जिनको न धर्म की बुद्धि दी गई और न दुनिया की। इमाम बुख़ारी ने अपनी सही हदीस में किसी धार्मिक शिक्षा की मज्लिस पर तिथि निर्धारित करने के लिए एक विशेष अध्याय स्थापित किया है जिसका शीर्षक यह है **من جعل لاھل العلم ایامًا معلومة** अर्थात् विद्या (इल्म) के अभिलाषियों को लाभ पहुंचाने के लिए विशेष दिनों को निर्धारित करना कुछ सहाबा की सुन्नत है। इस सबूत के लिए इमाम बुख़ारी अपनी सही में अबी वाइल से यह रिवायत करते हैं كان عَبدُاللہِ یَذکُرُالنَّاس فِی کُلِّ خِمیسٍ अर्थात् अब्दुल्लाह ने अपने प्रवचनों के लिए जुमेरात का दिन निर्धारित किया था और जुमेरात में ही उसके प्रवचन पर लोग उपस्थित होते थे।

यह भी याद रहे कि महा वैभवशाली ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में उपाय और प्रबंध के लिए हमें आदेश दिया है और हमें मामूर किया है कि जो उत्तम उपाय और प्रबंध इस्लाम की सेवा के लिए हम हित में समझें और दुश्मन पर विजयी होने के लिए लाभप्रद समझें वही कार्यन्वित करें, जैसा कि वह जिसके नाम का सम्मान हो फ़रमाता है -

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ (अनअन्फ़ाल-8/61)

अर्थात् धर्म के दुश्मनों के लिए हर प्रकार की तैयारी जो कर सकते हो करो और इस्लाम के कलिमः को बुलन्द करने के लिए जो शक्ति लगा सकते हो लगाओ। अब देखो कि यह पवित्र आयत कितनी बुलन्द आवाज़ से निर्देश दे रही है कि इस्लाम की सेवा के लिए जो उपाय प्रभावी हों सब करो और अपने चिन्तन की, अपने धन की, अपने उत्तम उपाय की सम्पूर्ण शक्ति इस मार्ग में खर्च करो ताकि तुम विजय पाओ। अब मूर्ख और अंधे और धर्म के दुश्मन मौलवी इस शक्ति का प्रयोग करने और कूटनीति का नाम बिदअत रखते हैं इस समय के ये लोग आलिम कहलाते हैं जिनको पवित्र क़ुर्आन का ही ज्ञान नहीं इन्नालिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। इस वर्णित आयत पर विचार करने वाले सामने सकते हैं कि हदीस नब्वी के अनुसार कि اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات इस्लाम की सेवा कि लिए कोई उत्तम व्यवस्था सोचना बिदअत और गुमराही में सम्मिलित नहीं है। जैसे-जैसे समयानुसार कठिनाइयां समक्ष आती हैं या नए-नए तौर पर हम लोगों पर विरोधियों के प्रहार होते हैं, हमें वैसे ही नए-नए उपाय करने पड़ते हैं। अतः यदि वर्तमान हालत के अनुसार उन प्रहारों को रोकने का कोई उपाय और निवारण सोचें तो वह एक उपाय है बिदअतों से उसका कुछ संबंध नहीं। संभव है कि समय के इन्क़िलाब (परिवर्तन) के कारण हमारे सामने कुछ ऐसी नवीन कठिनाइयां आ जाएं जो हमारे सय्यद-व-मौला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने भी उस रंग और उस प्रकार की कठिनाइयां सामने न आई हों। उदाहरणतया हम इस समय की लड़ाइयों में पहली पद्धति को जो मस्नून है अपना नहीं सकते क्योंकि इस युग में लड़ाई-झगड़ा (युद्ध) बिल्कुल बदल गया है और पहले हथियार बेकार हो गए तथा लड़ाइयों के नवीन हथियार पैदा हुए। अब यदि उन हथियारों को पकड़ना और उठाना तथा उन से काम लेना इस्लामी बादशाह बिदअत समझें और मियां रहीम बख़्श जैसे मौलवी की बात पर कान धर के इन नवीन हथियारों का इस्तेमाल करना गुमराही और गुनाह समझें और यह कहें कि यह वह युग की पद्धति है जो न रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनाई और न सहाबा और उनके पीछे आने वालों ने तो बताएं तो सिवाए इसके कि एक अपमान के साथ अपनी टूटी-फूटी हुकूमतों से अलग किए जाएं और दुश्मन विजयी हो जाए कोई और भी परिणाम होगा? अतः ऐसे स्थान उपाय और व्यवस्था में चाहे वह प्रत्यक्ष लड़ाई-झगड़ा हो या आन्तरिक और चाहे तलवार की लड़ाई हो या क़लम की हमारे हिदायत पाने के लिए यह उपरोक्त पवित्र आयत पर्याप्त है। अर्थात् यह कि وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ (अलअन्फ़ाल-8/61)

महा वैभवशाली अल्लाह तआला इस आयत में हमें सामान्य अधिकार देता है कि दुश्मनों के सामने तुम्हें जो सही उपाय लगे हो और जो पद्धति तुम्हें प्रभावी और उचित दिखाई दे वही पद्धति अपनाओ।

अब स्पष्ट है कि इस उत्तम व्यवस्था का नाम बिदअत और गुनाह रखना और धर्म के सहायकों को जो दिन-रात इस्लाम के कलिम: को बुलन्द करने की चिन्ता में है, जिनके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि حبّ الانصار من الایمان उनको मर्दूद ठहराना नेक स्वभाव लोगों का काम नहीं है बल्कि वास्तव में यह उन लोगों का काम है जिनकी रूहानी शक्लें बिगड़ चुकी हैं। और यदि यह कहो कि यह हदीस कि حبّ الانصار من الایمان۔ و بغض الانصار من النفاق अर्थात् अन्सार से प्रेम रखना ईमान की निशानी और अन्सार से वैर रखना दोगलेपन की निशानी है। यह उन अन्सार के बारे में है जो मदीना के रहने वाले थे न कि सामान्य और समस्त अन्सार। तो इस से यह अनिवार्य होगा कि जो उस युग के बाद रसूलुल्लाह के अन्सार हों उन से वैर रखना वैध है, नहीं-नहीं बल्कि यह हदीस यद्यपि एक विशेष गिरोह के लिए कही गई परन्तु अपने अन्दर व्यापक का लाभ रखती है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अधिकतर आयतें विशेष गिरोह के लिए उतरीं परन्तु उन का चरितार्थ (मिस्दाक़) व्यापक ठहराया गया है। अत: ऐसे लोग जो मौलवी कहलाते हैं धर्म के अन्सार के दुश्मन और यहूदियों के पद चिन्हों पर चल रहे हैं। किन्तु हमारा यह कथन सब पर नहीं है ईमानदार उलेमा इस से बाहर हैं, केवल विशेष मौलवियों के बारे में यह लिखा गया है। हर एक मुसलमान को दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला इस्लाम को शीघ्र इन बेईमान मौलवियों के अस्तित्व से मुक्ति प्रदान करे। क्योंकि इस्लाम पर अब एक अत्यंत संवेदनशील समय है और ये मूर्ख दोस्त इस्लाम पर हंसी-ठट्ठा कराना चाहते हैं और ऐसी बातें करते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के दिल के नूर को स्पष्ट तौर से सच्चाई के विरुद्ध दिखाई देती हैं। इमाम बुख़ारी पर अल्लाह तआला रहमत करे उन्होंने इस बारे में भी अपनी किताब में एक अध्याय स्थापित किया है। वह उस अध्याय में लिखते हैं -

قَالَ عَلی رَضِیَ اللہُ عَنْہُ حَدِّثُوا النَّاسَ بما یعرفون أتحبون ان یکذب اللہ و رسولہٗ

(अर्थात-लोगों को वह बात बताएं जिन्हें वे पहचानते (समझते) हों। क्या तुम्हें यह पसंद है कि लोग अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाएँ? अनुवादक) और बुख़ारी के हाशिए में इस की व्याख्या में लिखा है ای تکلموا الناس علی قدر عقولھم अर्थात् लोगों से अल्लाह और रसूल की कही गई वे बातें करो जो उनकी समझ में आ जाएं और उनको उचित दिखाई दें। अकारण अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झूठा मत ठहराओ। अब स्पष्ट है कि जो विरोधी इस बात को सुनेगा कि मौलवियों ने यह फ़त्वा दिया है कि तीन मस्जिदों या एक दो अन्य स्थानों के अतिरिक्त किसी तरफ सफर वैध नहीं ऐसा विरोधी इस्लाम पर हंसेगा और शरीयत लाने वाले अलैहिस्सलाम की शिक्षा में दोष निकालने के लिए उसे अवसर मिलेगा। उसे यह तो ख़बर नहीं होगी कि किसी कमअक़्ली के कारण यह केवल मौलवी की शरारत है या उसकी मूर्खता है वह तो सीधा हमारे सय्यद-व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आक्रमण करेगा, जैसा कि इन्हीं मौलवियों की ऐसी ही कई फ़साद फैलाने वाली बातों से ईसाइयों को बहुत मदद मिल गई है। उदाहरणतया जब मौलवियों ने अपने मुंह से इक़रार किया कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो नऊज़ुबिल्लाह मुर्दा हैं परन्तु हज़रत ईसा क़यामत तक जीवत हैं तो

वे लोग अहले इस्लाम पर सवार हो गए और हज़ारों भोले भाले लोगों को उन्होंने इन्हीं बातों से गुमराह किया और इन उद्दण्ड (गुस्ताख़) लोगों ने यह नहीं समझा कि अंबिया तो सब जीवित हैं मुर्दा तो उनमें से कोई भी नहीं। मेराज की रात आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी की लाश दिखाई नहीं दी, सब जीवित थे। देखिए महा वैभवशाली ख़ुदा अपने नबी करीम[स.] को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जीवित होने की पवित्र क़ुर्आन में ख़बर दता है और फ़रमाता है -

فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ (अस्सज्द: - 32/24)

और स्वयं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा जाने के बाद अपना जीवित हो जाना और आकाश पर उठाए जाना और रफ़ीक़-ए-आला को जा मिलना वर्णन करते हैं। फिर मसीह के जीवित रहने में कौन सी अनोखी बात है जो दूसरों में नहीं। मेराज की रात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त नबियों को बराबर जीवित पाया और हज़रत ईसा को हज़रत यह्या के साथ बैठा हुआ देखा। ख़ुदा तआला मौलवी अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी पर रहम करे वह एक समय के मुहद्दिस का कथन लिखते हैं कि उनका यही मत है कि यदि कोई मुसलमान होकर किसी दूसरे नबी के जीवन को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन से अधिक सुदृढ़ समझे तो वह इस्लाम के दायरे से बाहर है या शायद यह लिखा है कि निकट है कि वह काफ़िर हो जाए। परन्तु ये मौलवी ऐसे फ़ित्नों से रुकते नहीं और केवल इस ख़ाकसार से विरोध प्रकट करने के लिए धर्म से निकलते जाते हैं। ख़ुदा तआला इन सब को पृथ्वी से उठा ले तो अच्छा है ताकि इस्लाम धर्म इन के अक्षरांतरणों (तहरीफ़ों) से बच जाए। तनिक इन्साफ़ करने का स्थान है कि सैकड़ों लोग विद्या की तलब (अभिलाषा) में या मुलाक़ात के लिए ख़ुश्क शिक्षक नज़ीर हुसैन के पास देहली में जाएं वह सफ़र वैध (जायज) हो और फिर स्वयं नज़ीर हुसैन साहिब बटालवी साहिब का वलीमा खाने के लिए इस बुढ़ापे की आयु में दो सौ कोस का सफर करके बटाला पहुंचें तो और वह सफ़र सही हो और फिर शेख़ बटालवी साहिब प्रत्येक वर्ष अंग्रेज़ों के मिलने के लिए शिमला की तरफ जाएं ताकि दुनिया का सम्मान प्राप्त करें तो वह सफर निषिद्ध और हराम न समझा जाए। इसी प्रकार कुछ मौलवी धर्मोपदेश का नाम लेकर पेट भरने के लिए पूरब और पश्चिम की तरफ़ घूमते फिरें और उस सफर पर कोई ऐतराज़ न हो। और कोई इन लोगों पर बिदअती और दुष्कर्मी तथा मर्दूद होने के फ़त्वे न दे। परन्तु जब यह ख़ाकसार ख़ुदा की आज्ञा और आदेश से सच की दावत के लिए मामूर होकर ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपनी जमाअत के लोगों को बुलाए तो वह सफ़र अवैध (हराम) हो जाए और यह ख़ाकसार इस कार्य के कारण मर्दूद कहलाए। क्या यह तक़्वा (संयम) और ख़ुदा से डरने का ढंग है। अफसोस कि ये मूर्ख यह भी नहीं जानते कि उपाय और प्रबंध को बिदअतों की मद में सम्मिलित नहीं कर सकते। प्रत्येक समय और युग नए प्रबंध को चाहता है। यदि कठिनाइयों की नवीन परिस्थितियां सामने आएं तो नवीन प्रकार के उपायों के अतिरिक्त हम और क्या कर सकते हैं। अत: क्या ये उपाय बिदअतों में गिने जाएंगे। जब असल सुन्नत सुरक्षित हो और उसी की रक्षा के लिए कुछ उपायों की हमें आवश्यकता हो तो क्या वे उपाय बिदअत कहलाएंगे? नऊज़ुबिल्लाह, हरगिज़

नहीं। बिदअत वह है जो अपनी वास्तविकता में सुन्नत-ए-नबवी के विपरीत और विरुद्ध हो और आसारे नबवी में उस काम के करने के बारे में डांट-डपट और धमकी पाई जाए और यदि केवल प्रबंध की नवीनता तथा नवीन उपाय पर बिदअत का नाम रखना है तो फिर इस्लाम में बिदअतों को गिनते जाओ कि असंख्य हैं। सर्फ़ विद्या (व्याकरण) भी बिदअत होगी, नह्वा विद्या भी बिदअत होगी और तर्क शास्त्र भी तभा हदीस का लिखना और अध्यायीकरण करना (बाब बांधना) तथा क्रम बद्ध करना सब बिदअतें होंगी। इसी प्रकार रेल की सवारी में चढ़ना, मशीनों से बना कपड़ा पहनना, डाक में पत्र डालना, तार के द्वारा कोई ख़बर मंगवाना, बंदूक और तोपों से लड़ाई करना ये समस्त कार्य बिदअतों में सम्मिलित होंगे, बल्कि बन्दूक और तोपों से लड़ाई करना न केवल बिदअत बल्कि बहुत बड़ा गुनाह ठहरेगा। क्योंकि एक सही हदीस में है कि आग के अज़ाब से किसी को मारना अत्यन्त वर्जित है। सहाबा से अधिक सुन्नत पर चलने वाला कौन हो सकता है परन्तु उन्होंने भी सुन्नत के वे मायने न समझे जो मियां रहीम बख़्श ने समझे। उन्होंने उपाय और प्रबंध के तौर पर बहुत से ऐसे कार्य किए कि जो न आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किए और न पवित्र क़ुर्आन मे आए। हज़रत उमर रज़ियल्ललाहु अन्हो की नई बातें ही देखो जिन की एक पुस्तक बनती है। इस्लाम के लिए हिज्री तिथि उन्होंने निर्धारित की और शहरों की सुरक्षा के लिए कोतवाल नियुक्त किए और बैतुल माल के लिए एक नियमित रूप से रजिस्टर बनाया, युद्ध करने वाली सेना के लिए हाज़िरी और रुख़सत के नियम बनाए तथा उनके युद्ध करने के नियम बनाए मुकद्दमों इत्यादि के रुजू के लिए विशेष-विशेष निर्देशों का संकलन किया प्रजा की रक्षा के लिए बहुत से नियम अपनी ओऱ से बना कर प्रसारित किए और स्वयं कभी-कभी अपनी ख़िलाफ़त के दौर में गुप्त तौर पर रात को भ्रमण करना और प्रजा का हाल इस प्रकार से मालूम करना अपना विशेष कार्य ठहराया परन्तु कोई ऐसा नया कार्य इस ख़ाकसार ने तो नहीं किया। केवल ज्ञान-प्राप्ति इस्लाम की सहायता के मशवरे और भाइयों की मुलाक़ात के लिए यह जल्सा प्रस्तावित किया। रहा मकान का बनाना तो यदि कोई मेहमानदारी की नीयत तथा हर आने-जाने वाले के आराम की नीयत से मकान बनाना अवैध (हराम) है तो उस पर कोई हदीस या आयत प्रस्तुत करनी चाहिए। बिरादरम हकीम नूरुद्दीन साहिब ने क्या गुनाह किया कि केवल लिल्लाह (ख़ुदा की ख़ातिर) इस सिलसिले की जमाअत के के लिए एक मकान बनवा दिया। जो व्यक्ति अपने सामर्थ्य और अपने प्रिय माल से धर्म की सेवा कर रहा है उस को आरोप का निशाना बनाना किसी प्रकार की ईमानदारी है। हे सज्जनो! मरने के बाद मालूम होगा, थोड़ा सब्र करो। वह समय आता है कि इन सब गुस्ताखियों के बारे में पूछे जाओगे। आप लोग हमेशा यह हदीस पढ़ते हैं कि जिसने अपने समय के इमाम को न पहचाना और मर गया वह मूर्खता की मौत पर मरा। परन्तु आपको इसकी कुछ भी परवाह नहीं कि एक व्यक्ति ठीक समय पर अर्थात् चौदहवीं सदी के आरंभ में आया और न केवल चौदहवीं सदी बल्कि ठीक गुमराही के समय तथा ईसाइयत और दर्शन शास्त्र के प्रभुत्व के समय उसने प्रकटन किया और बताया कि मैं समय का इमाम (सुधारक) हूं और आप लोग उसके इन्कारी हो गए और उसका नाम काफ़िर और दज्जाल रखा और अपने बुरे अंजाम से थोड़ा भी भयभीत

न हुए और मूर्खता पर मरना पसंद किया। अल्लाह तआला ने मार्ग-दर्शन किया था कि तुम पांच समय की नमाज़ों में यह दुआ किया करो कि

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ۬ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ

عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾ (सूरह अलफ़ातिहा- 6,7)

अर्थात् हे हमारे ख़ुदा अपने इनाम पाने वाले बन्दों का मार्ग बता वे कौन हैं। नबी, सिद्दीक (सत्यनिष्ठ) शहीद और नेक लोग। इस दुआ का सारांश यही था कि इन चार गिरोहों में से जिन का युग तुम पाओ उसकी संगत में आ जाओ उस से लाभ प्राप्त करो। परन्तु इस युग के मौलवियों ने इस आयत पर ख़ूब अमल किया। शाबाश-शाबाश मैं उनको किस से उपमा दूं। वे उस अन्धे के समान हैं जो दूसरों की आंखों का इलाज करने के लिए बहुत ज़ोर के साथ डींगें मारता है और अपने अन्धेपन से लापरवाह है।

अन्त में मैं यह भी व्यक्त करता हूं कि यदि मौलवी रहीम बख़्श साहिब अब भी इस फ़त्वे से रुजू न करें (न लौटें) तो मैं उन्हें महा वैभवशाली अल्लाह की क़सम देता हूं कि यदि वह सत्याभिलाषी है तो इस बात के फैसले के लिए मेरे पास क़ादियान में आ जाएं। मैं उनके आने-जाने का ख़र्च दे दूंगा और उन पर पुस्तकें खोल कर और क़ुर्आन तथा हदीस दिखा कर सिद्ध कर दूंगा कि उनका यह फ़त्वा सर्वथा ग़लत और शैतानी बहकावे से है।

والسَّلامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى

(17, दिसम्बर 1892 ई.)

ख़ाकसार

ग़ुलाम अहमद क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर

(आईना कमालात-ए-इस्लाम पृष्ठ- 555-568 तक)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM

Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851 9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

HO & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों पर ऐतराज़ का जवाब

(हज़रत मुसलेह मौऊद रज़िअल्लाह अन्हु की क़लम से)

अनुवादक- फरहत अहमद आचार्य

अल्लाह की विशेषताओं के बारे में यह प्रश्न भी पैदा होता है कि यदि अल्लाह दयालु है जैसा कि कहा जाता है तो उसने नाना प्रकार के हिंसक पशुओं और कीड़े मकोड़ों को क्यों पैदा किया? और यातनाएँ, कष्ट तथा रोग क्यों पैदा किए?

इस्लाम ने इस प्रश्न का भी समाधान प्रस्तुत किया है केवल 'दयालु' कहकर नहीं छोड़ दिया। अत: पवित्र क़ुर्आन में आता है -

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا بِرَبِّہِمْ یَعْدِلُوْنَ

अल्हम्दो लिल्लाहिल्लज़ी ख़लक़स्समावाते वल्अर्ज़ा व जअलज़्ज़ुलोमाते वन्नूर। सुम्मल्लज़ीना कफ़रू बेरब्बेहिम याऽदेलून। (सूर: अनआम आयत-2)

अर्थात् समस्त प्रशंसाएँ जो हो सकती हैं अल्लाह के लिए ही हैं जिसने पृथ्वी और आकाश का निर्माण किया है और जिसने सभी प्रकार के अंधकार तथा प्रकाश को पैदा किया है। इस पर भी वे लोग जो सच्चाई के इन्कारी हैं, अल्लाह के साथ अन्य देवी देवताओं को उसके समान ठहराते हैं अर्थात् हर प्रकार की वे वस्तुएँ जो दु:खदायी हैं तथा अन्धकार की आत्मज कहलाती हैं अर्थात् उनका तम से ही जन्म हुआ है जैसे सर्प, बिच्छू, हिंसक जीव-जन्तु इत्यादि। विष आदि, रोग तथा दु:ख, यातनाएँ इत्यादि उनको भी अल्लाह ने पैदा किया है। उनका जन्म अल्लाह की दया के विरुद्ध नहीं अपितु उसकी दया को सिद्ध करता है। उनकी वास्तविकता को दृष्टि में रखकर अल्लाह की प्रशंसा और कीर्ति सिद्ध होती है न कि उस पर आरोप लगता है। किन्तु बावजूद इसके जो लोग इस वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं वे इन चीज़ों के जन्म को अल्लाह की शान और उसकी महानता के विरुद्ध समझते हैं और अल्लाह का एक और भागीदार बना लेते हैं कि ऐसी हानिकारक चीज़ों का जन्मदाता कोई और है।

देखो किस प्रकार स्पष्ट रूप से सत्य के ऊपर से पर्दा उठाया है और कैसा सूक्ष्म उत्तर दिया है कि जिन वस्तुओं को हानिकारक कहा जाता है, उनका पैदा करना हानिकारक नहीं है अपितु पैदा करने का उद्देश्य तो अच्छा ही है और मनुष्य के कल्याण के लिए है और उसे उनके निर्माण पर अल्लाह की प्रशंसा और यशोगान करना चाहिए।

इस स्पष्टीकरण के अनुसार अब उन बातों पर विचार किया जाए जो हानिकारक प्रतीत होती हैं तो बात कुछ और ही दिखाई देती है। विष नि:स्सन्देह मनुष्य को मारता है किन्तु कितने रोगों में संखिया और कुचला प्रयोग में लाया जाता है, अफ़ीम दी जाती है। क्या वे लोग जो संखिया, कुचले या अफ़ीम से मरते हैं अधिक हैं या वे लोग जो इनके द्वारा बचते हैं? निश्चय ही इन औषधियों के द्वारा प्रति वर्ष लाखों लोग

मरते-मरते बचते हैं। फिर किस प्रकार कहा जा सकता है कि अल्लाह ने ये क्यों पैदा की हैं? इसी प्रकार सांप बिच्छू आदि की हालत है। अभी तक वस्तु-विज्ञान-वेत्ताओं ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया अन्यथा जब वे उन पर विचार करेंगे तो उनको मालूम होगा कि ये जन्तु भी स्वाभावतया अत्यन्त लाभप्रद हैं। इसके अतिरिक्त उनकी सृष्टि जैसा कि पवित्र क़ुर्आन से मालूम होता है मनुष्य की सृष्टि के लिए आधारशिला (अग्रदूत, अगुआ) थी और धरती पर वायुमंडल को साफ करने में कीड़े-मकोड़ों का भी एक बहुत बड़ा योगदान है। वास्तव में ये जन्तु मानवीय सृष्टि की प्रथम कड़ियाँ हैं इस प्रकार नहीं जैसे कि आज-कल कुछ लोगों का विचार है अपितु इस दृष्टि से कि इनमें से प्रत्येक जन्तु पृथ्वी के नाना परिवर्तनों पर गवाही देता है और उसकी यादगार है।

इसी प्रकार अल्लाह का कथन है -

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَابَّةٍ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۔ وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ

व मिन आयातेही ख़ल्क़ुस्समावाते वल्अर्ज़े व मा बस्सा फ़ीहिमा मिन दाब्बतिन। व होवा अला जम्ए हिम इज़ा यशाओ क़दीर। वमा असाबकुम मिम्मुसीबतिन फ़बेमा कसबत ऐदीकुम व यऽफ़ू अन कसीर। (सूर: शूरा आयत 30-31)

अर्थात् अल्लाह के पुरस्कारों में से समस्त आकाश तथा पृथ्वी और उनके मध्य की समस्त वस्तुओं की सृष्टि भी है। वह जब चाहे, उनको इकट्ठा भी कर सकता है। और जो कष्ट तुमको पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्मों का फल है। अल्लाह तो तुम्हारी बहुत सी भूलों के दुष्परिणामों को मिटाता रहता है अर्थात् अल्लाह ने सूर्य, चन्द्र तारागण और उनके मध्य की वस्तुएँ पैदा करके पृथ्वी पर मनुष्य को हाकिम (प्रधान) बना दिया है। अब यदि वह कुछ सामग्री से लाभ न उठायें या कुछ का अनुचित प्रयोग करके हानि उठाएं तो यह उनकी अपनी भूल है। अल्लाह तो जो कुछ करता है यह है कि उनकी भूलों और त्रुटियों के बहुत से दुष्परिणामों से उनको बचा लेता है। अत: मानवीय कष्ट परमात्मा की ओर से नहीं हैं अपितु उस क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुचित प्रयोग के कारण हैं जो मनुष्य के कल्याणार्थ बनाया गया है।

रोग भी उसी प्रभाव डालने वाले या प्रभावित होने वाली शक्ति का परिणाम हैं जो मनुष्यों में पैदा की गई है मनुष्य की समस्त उन्नति उसकी उन शक्तियों से सम्बन्धित हैं। यदि उसमें प्रभाव डालने वाली और प्रभावित होने वाली शक्ति न हो तो मनुष्य कभी वह न हो जो अब है। वह एक सामान्य क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुसार प्रत्येक आसपास की वस्तु पर प्रभाव डालता है और उससे स्वयं प्रभावित होता है तथा जब किसी समय उस प्रभाव डालने या प्रभाव लेने में उस क़ानून को तोड़ देता है तो रोगग्रस्त हो जाता है या कष्ट भोगता है। अत: रोग को अल्लाह ने नहीं पैदा किया अपितु अल्लाह ने उस क़ानून-ए-क़ुदरत को पैदा किया है जिस पर मनुष्य की उन्नति अवलम्बित है। उसमें न्यूनता या अधिकता करने पर मनुष्य स्वयं रोग को पैदा करता है और रोग जिन सिद्धान्तों से जन्म लेता है वह अपने स्थान पर चूँकि दया

और कृपा के परिणाम हैं इसलिए रोगों आदि की पैदाइश से भी अल्लाह की सत्ता पर कोई आक्षेप नहीं हो सकता। जो अवस्था रोग की है वही अवस्था पाप की है। पाप भी रोग की भांति कोई स्थायी अस्तित्व नहीं रखता। केवल क़ानून-ए-क़ुदरत के विरुद्ध या धार्मिक क़ानून के विरुद्ध सीमा को लांघ जाने या पीछे रह जाने का नाम पाप है। अत: पाप की मौजूदगी में भी अल्लाह की दयालुता और उसकी पवित्रता पर आक्षेप नहीं पड़ सकता।

पवित्र क़ुर्आन में जितने नाम 'पाप' के लिए वर्णन किए गए हैं वे सब के सब ऐसे हैं कि जो या तो हद से बढ़ जाने के सूचक हैं या पीछे रह जाने के। कोई भी शब्द ऐसा नहीं जो उचित नामों में से हो जिस से मालूम होता हो कि पवित्र क़ुर्आन के निकट पाप का स्थायी अस्तित्व कोई नहीं अपितु पुण्य के न होने का दूसरा नाम पाप है। स्मरण रहे पुण्य न करना मनुष्य के कर्मों का परिणाम है। जब वह अल्लाह के दिए हुए पुरस्कार को त्याग देता है या दूसरे के हक़ को छीन लेता है तो एक वस्तु को नष्ट का दोषी होता है न कि न बचाने का।

इस सूक्ष्म शिक्षा को जो पवित्र क़ुर्आन ने इस विषय में दी है, कि कि बावजूद हानिकारक वस्तुओं के मौजूद होने के अल्लाह के विशेष गुणों पर कोई आक्षेप नहीं पड़ सकता, दूसरे ग्रन्थ कदापि प्रस्तुत नहीं करते और न ही इस प्रकार घोषणा के साथ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यह केवल पवित्र क़ुर्आन की महानता है कि वह न केवल परमात्मा के गुणों को वर्णन करता है अपितु उनके बारे में ऐसा विस्तृत ज्ञान देता है कि दिल उसके द्वारा प्रेम तथा आज्ञाकारिता के भाव से भर जाता है, मस्तिष्क झूम उठता है तथा नेत्र मदमस्त हो जाते हैं तथा समस्त सन्देह और शंकाएँ मिट जाती हैं। अन्यथा संक्षेप रूप से अल्लाह के नामों का उल्लेख करना कोई चमत्कार और कमाल नहीं है।

इसी प्रकार जैसे अल्लाह के गुण 'दयालु' (सिफ़त-ए-रहम) के विरुद्ध यह प्रश्न उठाया जाता है कि बड़ों को तो उनके कर्मों के कारण कष्ट पहुँचते हैं, बच्चों आदि को क्यों दु:ख पहुँचते हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी उपर्युक्त उत्तर में आ गया है अर्थात् अल्लाह ने एक नियम बनाया है कि उस नियम में यह बात रखी गई है कि प्रत्येक वस्तु उससे प्रभाव ग्रहण करती है। यदि यह क़ानून न होता तो मनुष्य अपरिवर्तनशील होता। इस प्रकार जब वह परिवर्तन स्वीकार न करता तो अब वह जो उन्नति कर रहा है यह भी न करता। इसी विधान के अनुसार शिशु आदि अपने माता-पिता से अच्छी बातें भी ग्रहण करते हैं और बुरी बातें भी ग्रहण करते हैं। स्वास्थ्य भी उन से ग्रहण करते हैं तथा रोग भी। यदि रोग और यातनाएँ उनको माता-पिता से पैतृक सम्पत्ति में न मिलतीं तो सुन्दर शक्तियाँ भी न मिलतीं तथा मनुष्य, मनुष्य न होकर पाषाण का रूप होता जो सुन्दर असुन्दर किसी प्रभाव को ग्रहण न करता और जो उद्देश्य मनुष्य के जन्म का है वह व्यर्थ हो जाता। तब मनुष्य का जीवन पशुओं से भी पतित अवस्था में होता। शेष रहा यह प्रश्न कि इस कष्ट का - जो उन्हें क़ानून-ए-क़ुदरत के कारण मिलता है - उनको क्या प्रतिकार मिलेगा? क्योंकि यद्यपि क़ानून-ए-क़ुदरत मनुष्य की उन्नति के लिए हैं किन्तु फिर भी कुछ लोगों को कुछ लोगों की भूलों के कारण कष्ट तो पहुँच जाता है।

इसका उत्तर हमारी शरीअत पवित्र क़ुर्आन यह देता है कि प्रत्येक वह कष्ट जो मनुष्य को ऐसी बातों के फलस्वरूप मिलता है जिनमें उसका अपना हाथ नहीं उसकी तुलना कर ली जाएगी और मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के समय उसको दृष्टि में रखा जाएगा। अत: पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह का कथन है -

اَلْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ٍالْحَقُّ (सूर: आऽराफ़ - 9)

अलवज़नो योमैज़ेनिलहक्क़ो (सूर: आऽराफ़ - 9) इस महान् निर्णय के समय उन बातों को दृष्टि में रखा जाएगा जो किसी मनुष्य की उन्नति में बाधक थीं और जिनमें उसका कोई हाथ नहीं था। एक दूसरे स्थान पर अल्लाह का कथन है -

لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ أُولِى الضَّرَرِ

ला यस्तविलक़ायदूना मिनल मोऽमिनीना ग़ैरो उलिज्ज़ररे। (सूर: निसाअ- 96)

अर्थात् ईश्वर-भक्तों में से जो व्यक्ति धर्म की सेवा करते हैं और जो नहीं करते, वे समान नहीं हो सकते किन्तु वे लोग सेवा में इसलिए सकुचाते हैं कि उनको कोई प्राकृतिक हानि पहुँच गई है उनके विषय में यह विधान नही है। उनकी इस विवशता को अल्लाह दृष्टि में रखेगा।

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र कथन है -

मा यज़ालुल् बलाओ बिल्मोऽमिने वल् मोऽमिनते फ़ी ऩफ़्सेही व वलदेही व मालेही हत्ता यत्तक़िल्लाहा तआला व मा अलैहे ख़तीअतुन (तिर्मिज़ी शरीफ़)

अर्थात् ईश्वर भक्त पुरुष हो या स्त्री उसे जो भी कष्ट पहुँचता है चाहे वह निज से सम्बन्धित हो, सन्तान से सम्बन्धित हो या धन आदि से सम्बन्धित हो किन्तु अल्लाह उसकी भूलों और त्रुटियों को कम कर देता है और उन कष्टों को सहन करने के कारण उनकी आत्मा में पवित्रता की एक ऐसी शक्ति पैदा हो जाती है कि जब वे अल्लाह से मिलेंगे तो उस समय तक पवित्र हो चुके होंगे। इस स्थान पर यह धोखा न लगे कि यह आज्ञा केवल भक्तों के लिए है। लाभ प्रत्येक को अपने अधिकार और पात्र के अनुसार पहुँचता है। पवित्र क़ुर्आन का निर्णय सर्वसाधारण है। हदीस में चूँकि मुसलमानों के प्रश्न के उत्तर में यह बात बताई गई है अतएव उन्हें सम्बोधित किया गया है।

अब देखो एक ही विशेषता की व्याख्या में धर्मों में कहाँ से कहाँ तक विरोध पहुँच गया है। इस्लाम ने इसका तात्पर्य कुछ और ही लिया है और कुछ अन्य धर्मों ने तथा उनके अनुयायियों ने दया की विशेषता को स्थिर रखने के निमित्त आवागमन का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। जबकि साधारण से विचार करने पर मालूम हो सकता है कि इस्लाम की व्याख्या सर्वथा स्वाभाविक और क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुरूप है परन्तु दूसरी व्याख्या का आधार हमें कुछ ऐसी काल्पनिक बातों पर रखना पड़ता है जिनका कोई प्रमाण नहीं।

अल्लाह के गुण न्याय और दया भी ध्यान देने योग्य हैं। समस्त धर्म अल्लाह को न्यायशील भी मानते हैं और दयालु भी। किन्तु व्याख्या में भारी विरोध है। इस्लाम कहता है कि इन दोनों गुणों में कोई विरोध नहीं। ये दोनों गुण एक ही समय में प्रयुक्त हो सकते हैं और होते भी हैं। न्याय, दया के विरुद्ध नहीं अपितु उससे बढ़कर है। अत: अल्लाह का कथन है -

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

मन जाअ बिल हसनते फ़लहू अश्रो अम्सालेहा। व मन जाअ बिस्सैय्येअते फ़ला युजज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम ला युज़लमून। (सूर: अनआम - 161)

अर्थात् जो सत्कर्म करेगा उसे दोगुना प्रतिकार मिलेगा और जो दुष्कर्म करेगा उसे उतना ही दण्ड मिलेगा जितना उसने कर्म किया है और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा। इस आयत से मालूम हुआ कि इस्लाम के निकट किसी को उसके अधिकार से अधिक पुरस्कार दे देना अत्याचार नहीं अपितु उसके अधिकार से अधिक दण्ड दे देना अत्याचार है। इसमें क्या सन्देह है कि अत्याचार, कहते हैं किसी को उसके अपराध से अधिक दण्ड दे देने को या उसके अधिकार से कम बदला दे देने को अर्थात् पुण्य के स्तर के अनुसार प्रतिकार न देने या उसका हक़ किसी दूसरे को दे देने को। यह कार्य अल्लाह कभी नहीं करता। न कभी किसी को उसके दोष से अधिक दण्ड देता है, न उसके प्रतिकार को कम करता है, न किसी का हक़ किसी अन्य को दे देता है अपितु वह जो कुछ करता है, यह है कि वह प्रायश्चित किए हुए भक्त को जो अपने दोष को अनुभव करके अपने दुष्कर्म को त्याग कर एक धड़कते हुए दिल और कम्पित होठों तथा जलस्रोत की तरह अश्रुओं से परिपूर्ण नेत्रों और लज्जावनत शीश के साथ और भविष्य के लिए पूर्ण पवित्र तथा शुद्ध विचार से जो ठाठें मारती हुई समुद्र की लहरों के समान ऊपर उठ रहे होते हैं इन से मस्तिष्क को भरपूर कर के अल्लाह के द्वार पर आ खड़ा होता है, वह अल्लाह क्षमा करके नई जीवन प्रारम्भ करने का अवसर देता है। उस पिता की तरह, जिसका पुत्र आवारा हो गया था और दीर्घकाल के पश्चात् पश्चात्ताप करके घर को वापस लौटा था और अपने किए पर ऐसा पश्चात्ताप कर रहा था कि पिता के सामने नेत्र नहीं उठा सकता था, प्रेम के आवेग से विभोर होकर अपने वक्ष से लगा लेता है और उसको धुतकारता नहीं अपितु उसके वापस लौटने पर प्रसन्नता प्रकट करता है। क्या पिता के इस कार्य पर दूसरे पुत्रों को जो अपने पिता की सेवा में लगे हुए थे किसी उपालम्भ का अवसर है? क्या उनके लिए किसी आक्षेप का स्थान शेष है? अल्लाह की शपथ, नहीं, कदापि नहीं।

निश्चय ही दण्ड विधान, सुधार का एक बहुत बड़ा साधन है किन्तु सच्चे अर्थों में अपने आप से घृणा करना और शुद्ध पश्चात्ताप से अधिक दण्ड नरक की अग्नि भी नहीं हो सकती। जो कार्य नरक की अग्नि लाखों वर्षों में कर सकती है, अपने आप से सच्ची घृणा वह कार्य मिनटों में कर जाती है। जब कोई व्यक्ति शुद्ध रूप में अपने दोषों से प्रायश्चित करके और भविष्य के लिए सुधार के लिए उद्यत होकर अल्लाह के सामने प्रस्तुत हो तो अल्लाह की दयालुता का कर्त्तव्य है कि उस पर दया करे। क्या दयालु कृपालु अल्लाह अपने एक विनम्र भक्त को जो आशा व अभिलाषा का मूर्तरूप बन कर और अपने कर्मों से घृणा करके उसकी दयालुता के द्वार पर शिथिल हो कर गिर जाता है, धुतकार दे और उसकी ओर से मुख मोड़ ले? नहीं, अल्लाह की क़सम, कदापि नहीं।

(अहमदिया यानी हक़ीक़ी इस्लाम पृष्ठ 53-62)

प्रेम सब से, घृणा किसी से नहीं

लेखक - अनसार अली ख़ान, वास्कोडिगामा

अंतर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम समुदाय के संस्थापक ने क्या ही ख़ूब कहा कि -:

गालियां सुन के दुआ दो
पा के दु:ख आराम दो
किब्र की आदत जो देखो
तुम दिखाओ इन्किसार।

प्यारे पाठको ! सच्चा धर्म हमें आपसी प्रेम और सद्भाव तथा विनम्र रहना सिखाता हैं, और बताता है कि हमें लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय अहमदिया मुस्लिम समुदाय के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहेब क़ादियानी के तृत्तीय उत्तराधिकारी (ख़लीफ़ा) हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहेब ने "प्रेम सब से, घृणा किसी से नहीं" यह अविस्मरणीय नारा दिया था। इस की पृष्ठभूमि वर्णन करते हुए उन्होंने स्वयं एक अवसर पर कहा कि :-

मैंने अपने जीवनकाल में पवित्र क़ुरआन का सैकड़ों बार ध्यान से अध्ययन किया है। इसमें एक भी आयत (वाक्य) नहीं है जो सांसारिक मामलों में एक मुस्लिम और एक ग़ैर-मुस्लिम के बीच अंतर सिखाती हो। इस्लामी शरीयत मानव जाति के लिए केवल दया और करुणा है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके अनुयायियों ने प्रेम और करुणा से लोगों का दिल जीत लिया था, अगर हमें लोगों का दिल जीतना है तो प्यारे नबी और उनके अनुयायियों के पदचिन्हों पर चलकर उनका अनुसरण करना होगा, प्रेम से लोगों के मन को जीतना होगा। पवित्र क़ुरआन की शिक्षाओं का सारांश "प्रेम सबसे घृणा किसी से नहीं" है। यही तरीक़ा है दिलों को जीतने का, इसके अतिरिक्त और कोई तरीक़ा नहीं है। (पश्चिम का दौरा पृ ५२३)

सन् १९८० में पश्चिम की यात्रा के दौरान पश्चिम जर्मनी में एक पत्रकार ने तत्कालीन अहमदिया मुस्लिम विश्व प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद से उनके जीवन के उद्देश्य और दृष्टिकोण के बारे में पूछा तो उन्होंने तत्काल उत्तर दिया कि :- मैंने अपना जीवन मानव जाति के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया है, मेरे हृदय में मानव जाति के लिए प्रेम और करुणा का सागर है। आप ने कहा कि, मैं उन्हें कल्याण के लिए जो निस्संदेह सत्य की राह है, बुला रहा हूं। यहां भी प्रेम ही का संदेश लेकर आया हूं। मनुष्य मनुष्य से प्रेम करे, फलस्वरूप प्रेम ही जनम लेता है और प्रेम ही की सदैव विजय होती है और पूर्वाग्रह की सदैव पराजय होती है। (पुस्तक दौरा ए मग़रिब १४०० हिजरी)

लंदन में एक पत्रकार परिषद को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि -: मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं और मैं राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। मेरा सन्देश सत्य धर्म का संदेश है जो कहता है कि मनुष्य

और मनुष्य के बीच कोई अंतर नहीं है। सत्य धर्म हमें बिना किसी अपवाद के हर इंसान से प्यार करना सिखाता है उसके अधिकारों को हड़पना नहीं सिखाता है..."प्रेम सब से, घृणा किसी से नहीं" इस बुनियादी सिद्धांत पर कार्यरत हों। (पश्चिम की यात्रा १४०० हिजरी)

आपने अंतर्राष्ट्रीय एकता और अखंडता का ऐसा अचूक उपाय बताया जिसकी आज भी दुनिया कायल है ,अपनी दूरदृष्टी से आने वाले ख़तरे को भांपते हुए आपने कहा कि -: तृतीय विश्व युद्ध का ख़तरा मानव जाति के सिर पर मंडरा रहा है। इस संपूर्ण विनाश से बचने के लिए यह आवश्यक है कि सभी मानव जाति एकजुट होकर इस ख़तरे को दूर करने का प्रयास करें।" One God & One Humanity अर्थात एक ईश्वर और एक मानव जाति , इस के सिद्धांत पर एकजुट होना चाहिए"। (पश्चिम की यात्रा १४००)

दोस्तो ! मुहब्बत की तलवार एक ऐसी तलवार है जिस से कोई बच नहीं सकता। शांति स्थापित करने का एकमात्र तरीक़ा प्रेम और नि:स्वार्थ सेवा के लिए मानव जाति के दिलों को जीतना है। ज्ञात हो कि विश्व शांति घातक हथियारों के माध्यम से नहीं बल्कि आपसी प्रेम और नि:स्वार्थ सेवा के माध्यम से होगी। उन्होंने एक बार कहा था कि -:

दुनिया तेवर चढ़ाकर तथा लाल आँखों से तुम्हें देख रही है, तुम मुस्कुराते चेहरे से दुनिया को देखो। हम तो यह भी पसंद नहीं करते कि जो अपनी तरफ़ से हमारा विरोधी है... उसके पांव में कांटा भी चुभे। परम प्रतापी अल्लाह ने हमें दुआएं करने और क्षमा करने के लिए बनाया है, उसने हमें मानव जाति का दिल जीतने के लिए बनाया है। हमने न तो किसी को दु:ख पहुंचाना है और न ही किसी को श्राप देना है। हमने सबके मंगलमय होने की कामना करते रहना है। (शुक्रवार उपदेश १४ जून १९७४ ई)

स्मरण रहे कि हमारी जमाअत (समुदाय) हर इंसान के कष्टों को दूर करने के लिए बनाई गई है । सदैव यह स्मरण रहे कि एक अहमदी कभी किसी से शत्रुता नहीं रखता और न रख सकता है। क्योंकि उसके रब ने उसे प्रेम करने तथा सेवा के लिए जन्म दिया है।

दोस्तो ! प्रेम सब से, घृणा किसी से नहीं" अहमदिया मुस्लिम समुदाय का वह आदर्श वाक्य है, जो इस्लाम की शिक्षाओं और समुदाय के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद से प्रेरित है। यह आदर्श वाक्य सार्वभौमिक प्रेम और करुणा, सहनशीलता और स्वीकृति, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, अंतरधार्मिक समझ, हिंसा और उग्रवाद को अस्वीकार करना यह एक सुंदर फ़लसफ़ा है जो व्यक्तियों को उनकी पृष्ठभूमि, आस्था या विश्वास की परवाह किए बिना सभी लोगों के प्रति प्रेम, दया और सहानुभूति विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस दृष्टिकोण को अपनाकर हम एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण कर सकते हैं। जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने कहा, "इस्लाम की शिक्षा यह है कि हमें सभी मानव जाति से प्यार करना चाहिए, और किसी से नफ़रत नहीं करनी चाहिए।

(अनसार अली ख़ान, वास्कोडिगामा)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ (النحل ۱۱)

Prop : Sk. Ishaque

FFT Fruits

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS

All India Truck Supplier

Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also

Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۚ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ○
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

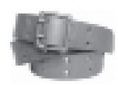

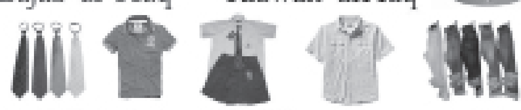

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

विश्व के प्रमुख धर्म

1. ईसाई , 2, रोमन कैथोलिक, 3. पूर्वी आर्थोडोक्स, 4. प्रोटेस्टेंट, 5. इस्लाम, 6. कन्फ्यूसियन, 7. हिन्दू, 8. बौद्ध, 9. जैन 10. शिन्तो, 11. टाओस्टा, 12. यहूदी, 13. पारसी, 14. सिक्ख।

विश्व के प्रमुख धर्मग्रन्थ

हिन्दू – वेद, पुराण, रामायण, महाभारत और भगवदगीता
पारसी – ज़ैद अवेस्ता
ईसाई – इंजील
मुस्लिम – कुरान शरीफ
यहूदी – तोराह
सिक्ख – गुरू ग्रन्थ साहब

विभिन्न देशों के राजनीतिकी दल

देश का नाम	राजनीतिक दल
1. संयुक्त राज्य अमेरिका	रिपब्लिकन पार्टी, डेमोक्रेटिक पार्टी
2. इराक	बाथ पार्टी
3. इजरायल	लेबर पार्टी, लिकुड पार्टी, हदाश पार्टी, शास पार्टी
4. फ्रासं	सोशलिस्ट पार्टी, नेशनल फ्रंट युनियन फॉर फ्रेंच डेमोक्रेसी
5. आस्ट्रेलिया	लिबरल पार्टी, लेबर पार्टी
6. बंग्लादेश	बंग्लादेश नेशनल पार्टी, आवामी लीग, जातीय पार्टी
7. नेपाल	नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी, नेपाली कांग्रेस पार्टी
8. चीन	चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी
9. श्रीलंका	यूनाईटेड नेशनल पार्टी, फ्रीडम पार्टी
10. दक्षिण अफ्रीका	अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस, नेशनल पार्टी, इन्कथा फ्रीडमपार्टी
11. यूनाईटेड किंगडम	कंजरवेटिव पार्टी, लेबर पार्टी, लिबरल डिमोक्रेटीक पार्टी
12. रूस	लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी, रशाज च्यास, कम्यूनिस्ट पार्टी
13. भारत	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी
14. पाकिस्तान	मुस्लिम लीग, पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी

* * *